राजस्थान लोक सेवा आयोग
प्रारम्भिक परीक्षा
सामान्य ज्ञान और सामान्य विज्ञान

(राजस्थान का इतिहास, कला,संस्कृति, परम्परा एवं विरासत)

राजस्थान की लोक देवियाँ

सम्प्रदाय

संत

राजस्थानी साहित्य की कृतियाँ, क्षेत्रीय बोलियाँ

राजस्थान के मुख्य पर्व/मेले

राजस्थान के लोक नाट्य

राजस्थान के लोक नृत्य

राजस्थानी वेशभूषा

रीति रिवाज

राजस्थान की लोक देवियाँ

राजस्थान के जनमानस में शक्ति के प्रतीक के रूप में लोक देवियों के प्रति अटूट श्रद्धा व आस्था है। साधारण परिवार की इन कन्याओं ने लोक कल्याणकारी कार्य किए और अलौकिक चमत्कारों से जनसाधारण के दु:खों को दूर किया। इसी कारण जनसामान्य ने इन्हें लोकदेवी के पद पर प्रतिष्ठित किया, ये लोकदेवियाँ निम्न हैं-

करणीमाता

करणीमाता	- **चूहो की देवी**
मुख्य मंदिर	- देशनोक, बीकानेर
विशेष मूलनाम	- रिद्धीबाई
पति	- बीठु देवा पाली
जन्म स्थान	- सुआप गाँव, चारण जाति में।
अन्यरूप	- सफेद चील
पिता	- मेहाजी
जाति	- चारण
इष्टदेवी	- तेमड़ा माता
उपनाम	- राठौड़ों व चारणों की कुलदेवी
रामदेव के गुरू	- बालिनाथ
नोट	- करणीमाता के देशनोक कस्बे को बसाया।
	- कान्ह को मारकर रणमल को शासक बनाया।
	- मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव रखी।
	- करणीमाता के मन्दिर राव जैतसी ने बनवाया।
	- मन्दिर को भव्यता सूरतसिंह ने दी।
	- मन्दिर का प्रांगण व मन्दिर के संगमरमर के दरवाजे गंगासिंह ने बनवाये।
	- करणीमाता की गुफा धिनेरू तलाई बीकानेर में है।
	- चूहो वाली इस देवी के मन्दिर में सफेद चूहों के दर्शन करना शुभ माना जाता है जिसे **काबा** कहा जाता है।
	- चैत्र व आश्विन माह के नवरात्रों के जागरण होता है।
	- जन्म आश्विन शुक्ला सप्तमी विक्रम संवत 1444 (10 सितम्बर 1387ई.)
	- मां की गर्भ में 21 माह तक। बचपन का नाम (रिद्धी बाई)
	- निर्वाण गडियाली (जैसलमर) मठ मंदिर को कहते है।
	- सफेद चील देवी का रूप।

कैलादेवी

कैलादेवी	- **यादवों की कुल देवी**
मुख्यमंदिर	- कालीसिंध नदी के किनारे विध्यांचल पर्वत श्रृंखला के **त्रिकुट पर्वत करौली** पर।
	- नवरात्रों में लक्खी मेला लगता है।
	- कैलादेवी के मन्दिर के सामने बोहरा समाज की छत्तरियाँ बनी हुई है।
	- इस मन्दिर का निर्माण करौली शासक गोपालसिंह बोहरा ने करवाया।
	- कैलादेवी की आराधना में **लागुनिया गीत व जोगणियाँ नृत्य** किया जाता है।
	- कैलोदवी को (**गुर्जर - मीणाओं** की इष्टदेवी) भी माना जाता है।
	- मान्यता है देवकी की गोद से उत्पन्न व कंस के द्वारा फेकी गई देवकी की पुत्री ही कैलादेवी है।

जीणमाता

जीणमाता	- **चौहानों की अराध्य देवी**
मुख्य मंदिर	- हर्ष पर्वत, रेवासा, सीकर
पिता	- घंघ राय
विशेष	- मन्दिर का निर्माण पृथ्वीराज चौहान प्रथम के समय राजा मोहिल द्वारा करवाया।
	- इस मन्दिर में जीणमाता की अष्टभुजी प्रतिमा है।
	- प्रतिवर्ष चैत्र व आश्विन माह के नवरात्रों में मेले का आयोजन होता है।
	- मन्दिर में पास काजल शिखर या पर जीण माता के भाई हर्षनाथ का मन्दिर है।
	- मन्दिर में माता को रोज ढाई प्याले शराब का भोग लगता हैं।
	- जीणमाता का गीत सभी लोकदेवी देवताओं में सबसे लम्बा गीत है।
	- औरंगजेब ने चमत्कारों से प्रभावित होकर वर्षों तक दीपक की ज्योत के लिए घी भेजा।
	- जयंती देवी की पीठ इनके मंदिर को कहते है।
	- मीणा समाज में लोकप्रिय।

शाकम्भरी माता

शाकम्भरी माता	- **चौहानों की कुल देवी**
मुख्यमंदिर	- सांभर, जयपुर
अन्य मन्दिर	- सहारणपुर (U.P)
	- भुज (गुजरात)
	- आसपुर तहसील (डुंगरपुर)
नोट	- उल्लेखनीय है कि चौहानों की कुलदेवी शाकम्भरी माता जबकि आराध्य देवी जीणमाता है।
	- पृथ्वीराज चौहान की आराध्य देवी चामुण्डा माता है।
	- शाकम्भरी माता को डूंगरपुर में आसपुरी माता के नाम से जाना जाता हैं।

आशापुरी / महोदरी माता

आशापुरी	- **सोनगरा चौहानों की कुलदेवी**
मुख्य मंदिर	- मोंदरा गाँव, जालौर
अन्य मंदिर	- आशापुरी माता नाडोल के चौहानों की भी कुलदेवी है।

आशापुरा माता

आशापुरा माता	- **बिस्सा जाति की कुलदेवी**
मुख्यमंदिर	- पोकरण, जैसलमेर

असावरी माता

असावरी माता	- **लकवाग्रस्त लोगो की देवी**
मुख्य मंदिर	- निकुम्भ, चितौड़
विशेष	- लूले-लगड़े व लकवाग्रस्त लोगों का इलाज करने वाली असावरी माता को आवरी माता के नाम से जाना जाता है।

शिलादेवी

शिलादेवी - **कछवाहो की आराध्य देवी**

मुख्य मंदिर - आमेर का दुर्ग

विशेष - शिलादेवी की मूर्ति मानसिंह प्रथम पूर्वी बंगाल स्थित जस्सोर के शासक केदारनाथ को हराकर लाए थे।

- शिलादेवी के ऊपर के हिस्से पर पंच देवों की प्रतिमाए उत्कीर्ण है।
- शिलोदवी की अष्टभुजी प्रतिमा (महिषासुर मर्दिनी)है।
- यह राजस्थान की एकमात्र देवी है जिसे नर बली दी जाती है।
- शिलोदवी के चरणामृत में जल व मंदिरा दी जाती है।
- प्रतिवर्ष चैत्र व आश्विन के नवरात्रों में मेला लगता हैं

राणी सती

- जन्म-महनगांव (झूंझूनु), वास्तविक नाम-नारायणी बाई, दादीजी के नाम से प्रसिद्ध।
- झूंझुनु में विशाल संगमरमर मंदिर। भाद्रपद अमावस्या को देवी का लक्खी मेला लगता है।
- 1595 ई. में सती। (संवत् 1952)। 1987 में कंवर सती कांड के बाद मेले पर राजस्थान सरकार ने प्रतिबन्ध लगा दिया।
- सती महिमामंडन के कारण राजस्थान सरकार ने महेन्द्र भानावत की पुस्तकें राजस्थान के लोक देवी-देवता पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

शीलता माता (चाकसू, जयपुर)

- उपनाम-सैठल माता या महामाई चेचक की देवी के रूप में प्रसिद्ध।
- मंदिर निर्माण जयपुर महाराजा श्री माधोसिंह जी ने (प्रथम) चैत्र कृष्णा सप्तमी -अष्टमी को इनकी वार्षिक पूजा मेला। बास्योड़ा भोजन करने का रिवाज।
- सवारी-गधा।
- बच्चों की संरक्षिका देवी, बांझ स्त्रियां संतान प्राप्ति हेतु इनकी पूजा करती।
- पूजा-खंडित प्रतिमा की।
- पूजारी-कुम्हार जाति के।
- प्रतीक-मिट्टी का दीपक।

आईजी माता (बिलाड़ा जोधपुर)

- जन्म-15वीं शताब्दी।
- मूल नाम -जीजी बाई, रामदेव जी की शिष्या।
- छुआछूत की भावना को दूर तक निम्न वर्ग को ऊंचा उठाने पर कार्य।
- आई पंथ के अनुयायियों को 11 नियमों की पालन अनिवार्य जिन्हे बैल के ग्यारह नियम कहते है।
- नवदुर्गा व देवी का अवतार। पुजारी दीवान कहलाते।
- सिरवी समाज की कुल देवी।
- दरगाह-मंदिर को, मंदिर में मूर्ति नहीं (केवल तस्वीर की पूजा) जिसे **बढेर-थान** का कहते है।
- नीम वृक्ष के नीचे अपना पंथ चलाया।
- मंदिर में दीपक की ज्योति से केसर टपकती है।

जमवाय माता

- ढंढाड़ के कच्छवाह वंश की कुल देवी।
- जमवारामगढ़ (जयपुर) में मंदिर।
- दुल्हराय ने मंदिर बनवाया।

सकराय माता

- मंदिर-उदयपुरवाटी (झुंझुनू)।
- अकाल पीड़ित जनता को बचाने के लिए इसने फल, सब्जियों, कंदमूल उत्पन्न किये थे, इसी कारण देवी शाकम्भरी कहलायी।
- एक मंदिर सांभर में दूसरा उत्तरप्रदेश के सहारपुर जिले में।
- खण्डेलवालों की कुल देवी।

नारायणी माता

- मंदिर-राजगढ़ (अलवर)।
- मंदिर 11वीं शताब्दी में प्रतिहार शैली में।
- नाई समाज की कुल देवी। वर्तमान में मंदिर पूजा के लिए मीणाओं व नाईयों में विवाद चल रहा

जिलाड़ी माता

- मंदिर-बहरोड़ (अलवर)।
- इन्होंने हिन्दूओं को मुस्लिम बनाने का विरोध किया।

भदाणा माता

- मंदिर-भदाणा (कोटा)।
- मूठ से पीड़ित व्यक्ति का इलाज किया जाता ।

बड़ली माता

- मंदिर-बेड़च नदी के किनारे, आकोला (चित्तौड़)।
- मंदिर की दो तिबारियों से बच्चे को निकालने से असाध्य रोग सही हो जाते है।

लटियाल माता

- मंदिर-फलौदी (जोधपुर), प्रमुख स्थान लोद्रवा (जैसलमेर)।
- कल्ला ब्राह्मणों की कुल देवी।
- मंदिर के पास खेजड़ी स्थित होने से माता को खेजड़ बेरी राय भवानी कहते है।

नागणेची माता

- मंदिर-नागाणा गांव (बाड़मेर)।
- मारवाड़ के राठौड़ वंश की कुल देवी।
- मंदिर राठौड़ राजा धुहड़ जी ने (13 वीं सदी) में बनवाया।

चामुण्डा माता

- मारवाड़ के राठौड़ वंश की आराध्य देवी।
- प्रतिहारों की कुल देवी।
- भीनमाल की सुंधा माता।

स्वागिया माता (आवड़ माता)

- जैसलमेर के भाटियों की कुल देवी।
- सुगन चिड़ी इनकी प्रतीक रूप।
- स्वांग शब्द का अर्थ-भाला।
- आवड़ माता का एक रूप स्वांगिया माता।

तनोट माता

- मंदिर-तनोट (जैसलमेर)।
- जैसलमेर भाटियों की आराध्य देवी।
- 1965 भारत पाक युद्ध के समय बम गिराये गये, सेना के जवानों की देवी।
- थार की वैष्णों देवी।
- पुजारी बी.एस.एफ के जवान।

बाणमाता

- मेवाड़ के सिसोदिया वंश की कुल देवी।
- प्रमुख मंदिर-केलवाड़ा (राजसमंद)।
- इसे बरबड़ी माता कहते है।

संच्चियाँ माता

- मंदिर-ओंसियां (जोधपुर)।
- 8 वीं -11 वीं शताब्दी के दौरान प्रतिहार शासकों द्वारा निर्मित। ओसवालों की कुल देवी।
- परमार राजकुमार उत्पलेदव द्वारा मंदिर का निर्माण।

चौथ माता

- मंदिर-चौथ का बरवाड़ा (सवाई माधोपुर)।
- अपने सुहाग की रक्षा के लिए स्त्रियाँ वैशाख, भाद्रवा, कार्तिक व माघ महिने की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को चौथ माता का वृत रखती है।
- कार्तिक कृष्णा चतुर्थी को करवा चौथ मनाई जाती है।
- चौथ माता कंजर जनजाति की आराध्य देवी।

हिंगलाज माता

जैसलमेर के भाटियों की कुलेदवी

मुख्य मन्दिर - लोद्रवा, जैसलमेर

अन्य मन्दिर - पाकिस्तान

- नारलोई, जोधपुर

सुराणा माता

- ओसवालों की सुराणा माता व दुग्गड शाखाओं की कुलदेवी।
- मंदिर गोरखाण गांव (नागौर) जीवित समाधि।

सुगाली माता

- मंदिर-आउवा (पाली)
- चंपावत राजपुतों की कुल देवी ।
- काले पत्थर की प्रतिमा में इनके 10 सिर तथा 54 हाथ।
- 1857 क्रांति के समय इनकी मूर्ति पाली म्यूजियम में रख दी गई। वर्तमान मूर्ति पाली म्यूजियम में।

अन्य लोकदेवी

घेवर माता :- राजसमंद

ज्वाला माता:-जोबनेर (जयपुर), खंगारोत राजपूतों की कूल देवी।

छीक माता :-जयपुर

अर्बूदा देवी:- माउण्ट आबु (सिरोही), राजस्थान की वैष्णों देवी, देवी के अधेरों की पूजा

जल देवी :- मंदिर बावडी (टोंक) संपुर्ण भारत में एकमात्र।

क्षेमकरी माता:- खीमेल माता कहते हैं, वसंतगड (सिरोही) में मंदिर।

हिचकी माता:-सनवाड फतहनगरी की लोक देवी (उदयपुर), पुजा से हिचकी रोग का निवारण किया जाता है।

राणी भटियाणी माता:- जन्म-जोगीदास गांव (जैसलमेर), विवाह-जसोल राजपरिवार में। भाद्रपद शुक्ला तेरस चोदस को मेला।

त्रिपुरा सुन्दरी माता/तरताई माता :- तलवाडा (बांसवाड़ा)।

दधिमती माता :- गोठमांग लोद (नागोर), दाधिच ब्राह्मणों की कुल देवी।

खलकानी माता :- लुणिया वास (जयपुर)।

कुशाला माता :- बदनौर (भीलवाड़ा) मंदिर का निर्माण महाराणा कुंभा ने करवाया (विक्रम संवत् 1490)।

भुवाल माता:-मंदिर-जसनगर (मेड़ता, नागोर)।

ब्राह्मणी माता:-सोरसन गावं (बांरा) देवी की पीठ का श्रृंगार तथा पीठ की पूजा। विश्व में संभवत् ऐसा एक मात्र उदाहरण।

अन्य लोकदेवी व मुख्य मन्दिर

लोकदेवी	मुख्य मंदिर
1. इन्द्रगढ़	इन्द्रगढ़ बून्दी
2. भॉवला माता	भॉवल ग्राम मेड़ता जालौर
3. जोगणिया माता	भीलवाड़ा
4. क्षेमकरी माता	भीनमाल, जालौर
5. खोडीयार देवी	खोडाल लोंगेवाला (जैसलमेर)
6. बिखड़ी माता	चित्तौड़गढ़ दुर्ग, उदयपुर
7. चारभुजा देवी	खमनौर, हल्दीघाटी राजसमन्द
8. राजेश्वरी	भरतपुर
9. ऊँटाला माता	जोधपुर
10. चौथमाता (कन्जरो की कुलदेवी)	चौथ का बरवाड़ा (सवाई माधोपुर)
11.भद्रकाली माता	हनुमानगढ़

रियासतों की कुलदेवी

रियासतों	कुलदेवी
1. बीकानेर	करणीमाता
2. जोधपुर	नागणेची
3. उदयपुर	बाणमाता
4. जैसलमेर	स्वांगिया (आवड़, हिंगलाज)
5. सीकर	जीणमाता
6. जालौर	महोदरी
7. सांभर	शाकम्भरी
8. जयपुर	जमवाया/जमवाय
9. करौली	कैलादेवी
10. आमेर	जमवाय
11. जोवनेर	ज्वाला
12. भरतपुर	राजेश्वरी
13. कोटा	भद्राणा
आउवा	सुगाली

नोट: कछवाहो की कुलदेवी जमवाय माता तथा आराध्यदेवी/इष्टदेवी शिलामाता/अन्नपूर्णा है।

विभिन्न जातियों की कुलेदवी

जाति	कुलदेवी
1. बिस्सा	आशापुरा (पोखरण)
2. सिरवी	आई
3. ओसवा	साचियाँ
4. कल्ला	लुटियाला
5. पांचाल	त्रिपुरासुन्दरी
6. खण्डेवाल	सकराय
7. भील	आमजा
8. ताई	नारायणी
9. भोपा	वीरात्रा
10. कन्जर	चौथ
11. गुर्जर	कैलोदवी
12. मीणा	कैलोदवी
13. यादव	कैलोदवी

सम्प्रदाय

राजस्थान में दो सम्प्रदाय प्रमुखत: मिलते हैं:-

(अ) सगुण सम्प्रदाय	(ब)निर्गुण सम्प्रदाय
रामानुज सम्प्रदाय	दादु सम्प्रदाय
रामानन्दी सम्प्रदाय	विशनोई सम्पद्राय
निम्बार्क सम्पद्राय	जसनाथी सम्प्रदाय
वल्लभ सम्प्रदाय	लालदासी सम्प्रदाय
निष्कंलक सम्प्रदाय	रामस्नेही सम्प्रदाय
गौड़ीय सम्प्रदाय	परनामी सम्प्रदाय
चरण दासी सम्प्रदाय	निरंजनी सम्प्रदाय
नाथ सम्प्रदाय	कबीर पंथी संप्रदाय
पाशुपत सम्प्रदाय	चरणदासी सम्प्रदाय

निम्बार्क सम्प्रदाय

अन्यनाम - हंस सम्प्रदाय
प्रवर्तक - निम्बार्काचार्य
दर्शन - द्वैताद्वैत/भेदाभेद
मुख्यपीठ - सलेमाबाद अजमेर
रचना - वेदान्त परिजात
विशेष - राधाकृष्ण की युगल पूजा करते है।
- राधा को कृष्ण की परिणीता मानते है।
- इसे महाराजा जगतसिंह ने सर्वाधिक आश्रय दिया।

वल्लभ सम्प्रदाय

अन्य नाम - पुष्टिमार्ग
प्रवर्तक - वल्लभाचार्य
दर्शन - शुद्धाद्वैत
मुख्यपीठ - सिंहाड़
अन्यपीठ - मथुरेशजी, कोटा
- विट्ठलजी, नाथद्वारा
- द्वारिकाधीश, कांकरौली
- गोकुलचन्द्रजी, कामवन, भरतपुर
- मदनमोहन जी, गोकुल, यू.पी.
- बालकृष्णजी, सूरत, गुजरात

रचना - अष्टछाप, कविमंडल, संगठन (विट्ठलनाथ द्वारा स्थापित)
विशेष - मुख्यपीठ वल्लभाचार्य द्वारा जबकि अन्यपीठ अनके सात पुत्रों द्वारा स्थापित है।
- इस सम्प्रदाय के लोग कृष्ण की पूजा करते है।
- इस सम्प्रदाय के लोग
  1. संगीत को हवेली संगीत
  2. कृष्ण को श्रीनाथ, 3. मन्दिर को हवेली
  4. दर्शन को झांकी 5. ईशकृपा को पुष्टि
- इस सम्प्रदाय के लोगों का मूल मंत्र श्रीकृष्णम् शरणम् नम:
- इस सम्प्रदाय के लोग कृष्ण के बालरूप की पूजा करते है।
- पुष्टिमार्ग की शुरूआत विट्ठलदास ने की थी।
- सूरदास इस **मार्ग के जहाज** कहलाते है।
- इस सम्प्रदाय को सर्वाधिक आश्रय महाराणा राजसिंह ने दिया।

नोट : किशनगढ़ का शासक सांवत सिंह इस सम्प्रदाय का अनन्य भक्ति द्वारा सन्यास आश्रम ग्रहण करते हुए सावन्तसिंह से नागरीदास बन गये।

गौड़ीय सम्प्रदाय

अन्य नाम - ब्रह्म सम्प्रदाय
मूल प्रवर्तक - बंगाल के चैतन्य महाप्रभु
राजस्थान के प्रवर्तक- माध्वाचार्य
दर्शन - द्वैतवाद
मुख्यपीठ - गोविन्द देवजी मन्दिर जयपुर (सवाई जयसिंह निर्मित) गोविन्द देवजी मन्दिर वृंद्धावन (मानसिंह)
रचना - माध्वाचार्य पूर्णप्रज्ञ भाष्य
विशेष - द्वैतवाद के अनुसार ईश्वर सगुण है और वह विष्णु है तथा उसका स्वरूप सत्-चित आनन्द (सचिदानन्द) है।
- गोरांग महाप्रभु चैतन्य ने कृष्णभक्ति, रामलीला व कीर्तन पर बल दिया था।
- जयपुर के शासक स्वयं को गोविन्ददेव जी का दीवान मानते है।
- सवाई प्रतापसिंह के समय बागड़ की कवयित्री बाई ने एक ही पद में श्रीकृष्ण के श्रृंगार का वर्णन किया लेकिन मुकुट के वर्णन से पहले ही पट खोल दिए गए और कृष्ण मूर्ति का मुकुट गिरा मिला।

रामानन्दी सम्प्रदाय

अन्यनाम - रसिक सम्प्रदाय
प्रवर्तक - गुरू रामानन्द
दर्शन - ज्ञानमार्गी
मुख्यपीठ - शिष्य कृष्णदास पहयारी द्वारा स्थापित गलताजी, जयपुर
अन्यपीठ - पह्यारी के शिष्य अग्रदास द्वारा स्थापित, रेवासा (सीकर)
रचना - रामरासो
विशेष - रामानन्द समाज में व्याप्त भेदभाव व ऊँचनीच को समाप्त करके समाज को एकसूत्र में बांधने का प्रयास किया।
- रामानन्द के 12 शिष्या 12 अलग-अलग जातियों से संबंधित थे जिनमें कबीर, धन्नाजी रैदास, पीपाजी मुख्य है।
- रामानन्द की भक्ति दास्यभाव की थी।
- रामानन्द के कुछ शिष्य निर्गुण भक्ति की ओर उन्मुख हो गये।
- अग्रदास जी भगवान राम को कृष्ण के समान रसिक मानतें थे।
- इस सम्प्रदाय को सर्वाधिक आश्रय सवाई जयसिंह ने दिया और दरबारी विद्वान कृष्णभट्ट ने रामरासो की रचना की।

रामानुज सम्प्रदाय

अन्य नाम - रामावत सम्प्रदाय
प्रवर्तक - तिरूपति, आन्ध्रप्रदेश में जन्मे रामानुजाचार्य
मुख्य प्रवर्तक - यमुनाचार्य (दक्षिणी भारत)
राजस्थान प्रवर्तक- रामानुजाचार्य
दर्शन - विशिष्टाद्वैतवाद
मुख्यपीठ - गलताजी जयपुर में शिष्य किलहदास व पह्यारी स्वामी द्वारा स्थापित

अन्य पीठ - शाहपुरा, भीलवाड़ा
रचना - रामानुजाचार्य द्वारा कृत ब्रह्मसूत्र पर श्री भाष्यटीका
विशेष - उल्लेखनीय है इस सम्प्रदाय के मुख्य प्रवर्तक यमुनाचार्य दक्षिणी भारत से संबंधित थे।
- यमुनाचार्य के प्रिय शिष्य रामानुजाचार्य ने इस सम्प्रदाय को विशिष्ट रूप देते हुए विशिष्ट द्वैतवाद दर्शन दिया।
- रामानुज आचार्य ने समस्त भारत में अलग-अलग आचार्य नियुक्त किए।
- रामानुज आचार्य ने प्रिय शिष्य रामानन्द ने रामानन्दी सम्प्रदाय की स्थापना की जो कि राज में प्रचलित है।
- इस तरह रामानन्दी सम्प्रदाय रामानुज की एक शाखा है।

सखी सम्प्रदाय

अन्य पहचान - निम्बार्क सम्प्रदाय की एक शाखा/सगुण भक्ति
प्रणेता - हरिदास जी
दर्शन - कृष्ण की सखी के रूप में आराधना
विशेष - इस सम्प्रदाय के अनुयायी स्वयं को श्रीकृष्ण की सखी मानकर आराधना करते है।

विश्नोई सम्प्रदाय

अन्य नाम - वैष्णव सम्प्रदाय
प्रवर्तक - जाम्भोजी
दर्शन - निर्गुण, निराकर ब्रह्मा (विष्णु)
मुख्यपीठ - मुकाम, बीकानेर
अन्यपीठ - सम्मराथल, बीकानेर
- जाबूल, बीकानेर
- जम्भा फलोदी, जोधपुर
- रामडावास पीपाड़, जोधपुर
रचना - जम्भ संहिता
- जम्भ सागर
- विश्नोई धर्मप्रकाश
जन्मस्थान - पीपासर, नागौर में पंवार राजपूत वंश में
वर्ष - 1451 ई.
सम्प्रदाय स्थापना वर्ष - 1485 में 29 शिक्षाओं के माध्यम से
विशेष - जाम्भोजी को विष्णु का अवतार माना जाता है।
प्रमुख उपदेश - ईश्वर सर्वव्यापक
- आत्मा अमर
- आत्मा का वशीकरण
- मुक्ति व मोक्ष के लिए गुरू का होना आवश्यक है।
विशेष - हिन्दु मुस्लिमों में व्याप्त आडम्बरो की आलोचना
- जाति व्यवस्था, मूर्ति पूजा, जटा रखना, कान छेदन, मुडन व कड़ा पहने का विरोध तथा नीले वस्त्र का त्याग।
- विधवा-विवाह के समर्थक।
- विष्णु की भक्ति पर बल।
- 29 शिक्षाओं में वैष्णव, इस्लाम व जैनधर्म का समन्वय ।
- उपदेशों में कबीर की छाप दृष्टिगोचर
- जाम्भोजी के 29 उपदेश और 120 शब्दों का संग्रह जम्भसागर में संग्रहीत है।
- जाम्भोजी को पर्यावरण विज्ञानी मानी जाती है।
- विश्नोई जाति काले हिरणों व खेजड़ी के प्रति अधिक संवेदनशील होती है।

सम्प्रदाय के अनुयायी - विश्नोई
सर्वाधिक अनुयायी - जाट जाति
समाधि स्थल - मुकाब तालबा, बीकानेर
मुख्य कार्यस्थल - सम्भराथल बीकानेर
नोट : - जाम्भोजी ने सिकन्दर लोदी को गौ हत्या पर रोक लगाने पर मजबूर किया।

जाम्भोजी के आठ स्थान (धाम)
- पीपासर (नागौर) जन्म स्थान।
- मुकाम (बीकानेर) समाधि स्थल (इसे मुक्ति धाम कहते है।)
- लालसर (बीकानेर) निर्वाण स्थल (मार्ग शीर्ष कृष्णा नवमी)
- जाम्भा (जोधपुर) पुष्कर की भांति पवित्र तीर्थ स्थल।
- जागलु (बीकानेर) नोखा स्थित इस स्थल पर विशाल मेला प्रसिद्ध मंदिर।
- रामडावास (पीपाड़-जोधपुर) व लोहावट दोनों उपदेश स्थल
- लोदिपुर (उत्तरप्रदेश)
- रोटू नागैर)
- माटो-जाम्भोजी के सम्मानार्थ बीकानेर के नरेश ने अपने राजकीय झण्ड़े में खेजड़े के वृक्ष को इस रूप में रखा।
- **कथा जैसलमेर री**-संत कवि वील्लोजी रचित, जाम्भोजी के प्रभाव से सिकन्दर लोदी ने गौहत्या पर प्रबिन्ध लगाया।
- जम्भगीता को विश्नोई सम्प्रदाय के अनुयायी पांचवा वेद मानते, राजस्थानी भाषा का अनुपम ग्रन्थ।
- पर्यावरण आंदोलन के विश्व के पहले प्रणेता।
- **विल्होजी**-जाम्भोजी के प्रमुख शिष्य (रामडावास निवासी)

जसनाथी सम्प्रदाय

अन्य पहचान - वैष्णव सम्प्रदाय
प्रवर्तक - जसनाथी
दर्शन - निर्गुण भक्ति ही ईश्वर साधना का मार्ग है।
मुख्यपीठ - कतरियासर, बीकानेर
रचना - शिम्भूधड़ा, कोडा
विशेष - जसनाथ जी को सिद्धपुरूष माना जाता है।
जन्मस्थान - कतरियासर, बीकानेर से हम्मीर व रूपादे जाट के घर में
जन्मतिथि - कार्तिक शुक्ल एकादशी विक्रम संवत 1539 अर्थात् 1482 ई. गोरखपंथ के प्रणेता गोरखनाथ के द्वारा मालीया, बीकानेर में कठिन तप के जरिये दीक्षित।
प्रमुख उपदेश - निर्गुण भक्ति
- कर्मवाद का सिद्धान्त
- गुरूमार्ग दर्शन अनिवार्य
- रात्रि जागरण
- निर्गुणी पद गायन
- धार्मिक पाखण्ड, मूर्ति पूजा, पशुबलि का विरोध करना अनिवार्य तथा भगवा वस्त्र।

सम्प्रदाय के अनुयायी - जसनाथी
सर्वाधिक अनुयायी - जाट
विशेष - जसनाथी जी ने 36 धर्म नियम दिए।

	-	जसनाथी विशेषता धँधकते अंगारों का नृत्य करना।
	-	जसनाथी अनुयायी जाल वृक्ष व मोरपंख को पवित्र मानते है।
नोट	-	लालनाथ जी इस सम्प्रदाय के अन्य संत तथा सिकन्दर लोदी (आगरा के संस्थापक) इस सम्प्रदाय से विशेष प्रभावित। व्यक्तित्व थे जिन्होंने जसनाथ जी को कतरियासर में भूमि दान की।
	-	जसनाथी ने केवल 24 साल की आयु में जीवित समाधि ले ली।

चरणदासी सम्प्रदाय

प्रवर्तक	-	चरणदास जी
दर्शन	-	सगुण व निर्गुण का मिश्रण
मुख्यपीठ	-	दिल्ली
राजस्थान पीठ	-	देहरा, अलवर
रचना	-	ब्रह्म ज्ञान सागर
	-	भक्ति सागर
	-	ब्रह्म चरित्र
	-	ज्ञान सर्वोदय
विशेष	-	चरणदास जी का मूलनाम रणजीत था।
जन्मस्थान	-	देहरा, अलवर भाद्रपद शुक्ला तृतीया वि.सं.1760 सन् 1703
गुरू	-	मुनी सुखदेव इनसे दीक्षा प्राप्त करके चरणदास नाम पड़ा।
प्रमुख उपदेश	-	निर्गुण निराकर ब्रह्म जी सखी भाव से सगुण भक्ति इसलिए सगुण व निर्गुण भक्ति भाव का मिश्रण
	-	योगीश्वर कृष्ण भक्ति पर बल
	-	गुरू सानिध्य को महत्व
	-	कर्मवाद को मान्यता
	-	नैतिक शुद्धता व करूणा पर बल
अनुयायी	-	पीले वस्त्र धारण करते है।
नोट	-	चरणदास जी के उपदेश 42 धर्म नियमों में समाहित है।
	-	चरणदास वे नादिरशाह के आक्रमण की भविष्यवाणी की थी।

लालदासी सम्प्रदाय

प्रवर्तक	-	लालदास जी
मुख्यपीठ	-	नगला, भरतपुर (मृत्युस्थल)
अन्यपीठ	-	शेरपुर, अलवर (समाधिस्थल)
रचना	-	लालदास की चेताबाणियाँ
जन्म	-	1540 ईस्वी।
जन्मस्थान	-	धौलीदूब गाँव अलवर के चाँदमल व सामदा के मेव परिवार में ।
गुरू	-	मुस्लिमसन्त गद्धन चिश्ती/गुद्दाम
प्रमुख उपदेश	-	निर्गुण भक्ति पर बल
	-	ईश्वर, निर्गुण, निराकर, सर्वशक्तिमान व सर्वत्र व्याप्त
	-	हिन्दुमुस्लिम एकता पर बल
	-	दृढ़ चरित्र व नैतिकता पर बल
	-	सामाजिक सदाचार पर बल
	-	पुरूषार्थ पर बल
	-	रूढ़ियों व आडम्बरों का विरोध
	-	ऊँचनीच का विरोध
अनुयायी	-	मेवजाति के लोग तथा कोई भी गृहस्थी
उपनाम	-	मेवजाति के संत
नोट	-	लालदासी साधु स्वयं कमाकर खाते हैं व किसी पर भी आश्रित नहीं रहते अर्थात् पुरूषार्थी।

अलखिया सम्प्रदाय

प्रवर्तक	-	लालगिरी
दर्शन	-	निर्गुण भक्ति
मुख्यपीठ	-	बीकानेर (दुर्ग के सामने)
अन्य पीठ	-	गलताजी
विशेष	-	सुलखिया गाँव, चुरू
गुरू	-	स्वयमेव प्रेरक इसलिए बचपन से ही नागासाधु
प्रमुख उपदेश	-	जाँति-पाँति व ऊँचनीच का विरोध
अनुयायी	-	मोची जाति के सर्वाधिक
रचना	-	कुण्डलिया
नोट	-	दुर्ग के सामने लगा **लाल पत्थर लालगिरी का प्रतीक** है जहाँ अनुयायी नारियल चढ़ाते हैं।
	-	बीकानेर नरेश इन्हें तीर्थ यात्रा पर अपने साथ लेकर गये है।

रामस्नेही सम्प्रदाय

प्रवर्तक	-	रामचरण
प्रारम्भिक नाम	-	रामकृष्ण
दर्शन	-	निर्गुण निराकार ब्रह्म
मुख्यपीठ	-	शाहपुरा (भीलवाड़ा)
अन्य पीठ	-	रैण (नागौर)
	-	खेड़ापा (जोधपुर)
	-	सिंहथल (बीकानेर)
रचना	-	अणर्भवाणी
नोट	-	सन्तों के स्थान को रामद्वारा कहा जाता है।
उत्सव	-	फूलडोल, शाहपुरा, भीलवाड़ा।
जन्मस्थान	-	सोडाग्राम (शूरसेन) जयपुर में बख्ताराम विजयवर्गीय के घर में
जन्मतिथित	-	24 फरवरी, 1720
गुरू	-	कृपाराम से दीक्षा प्राप्त करके रामकृष्ण से रामचरण में परिवर्तित
प्रमुख उपदेश	-	निर्गुण निराकर ब्रह्म राम की उपासना राम दशरथ के पुत्र न होकर कण-कण में व्याप्त निर्गुण निराकार परमबह्य।
	-	गुरू सेवा, सत्संगति व रामनास स्मरण पर बल मूर्तिपूजा, बाह्य आडम्बरो, जातिगत भेदभावों का विरोध।
अनुयायी	-	दाढ़ी मूँछ व सिर पर बाल रहित गुलाबी रंग के पोशाक धारक

तीन प्रमुख शिष्य जिनके द्वारा अलग -अलग स्थानों पर राम स्नेही सम्प्रदाय के निम्न तीन पंथ-

1. दरिया पंथ

प्रवर्तक	-	दरियाव जी
मुख्य पीठ	-	रैण (नागौर)
जन्म	-	जैतारण (पाली) के गिंगण व मानजी धुनिया के पुत्र

तिथि	–	जन्माष्टमी वि.स. 1733 (1676)
गुरू	–	प्रेमनाथ/बालकनाथ
प्रमुख उपदेश	–	राम में **'रा को राम 'म' को मोहम्मद साहब** का प्रतीक बताकर हिन्दुमुस्लिम भावना को प्रोत्साहन।

2. सिंहथल शाखा

प्रवर्तक	–	हरिराम दासजी
मुख्य पीठ	–	सिंहथल (बीकानेर)
जन्म स्थान	–	सिंहथल बीकानेर के भागचन्द जोशी के पुत्र
गुरू	–	जैमलदास
रचना	–	निसानी (प्राणायाम, समाधि, योगतत्वों का उल्लेख)
प्रमुख उपदेश	–	निर्गुण बह्म (परम) की भक्ति
	–	रामनाम का स्मरण
नोट:	–	गुरू को पारस पत्थर से भी उच्च स्थान।

3. खेडापा शाखा

प्रवर्तक	–	रामदास जी
मुख्य पीठ	–	खेड़ापा जोधपुर
जन्म स्थान	–	भीकम कोर ग्राम जोधपुर के सार्दुल व अणमी के पुत्र
जन्म तिथि	–	1726 ई./वि.स. 1783
गुरू	–	हरिराम दास जी
प्रमुख उपदेश	–	निर्गुण निराकर परम बह्म की भक्ति सतगुरू की सेवा व सत्संग पर बल।
	–	राम ही पूज्य।
नोट:	–	रामनाम के अलावा अन्य नाम का उच्चारण नहीं करते है लेकिन 20 सदी में खेड़ापा शाखा के अनुयायी सन्त-रामसुखदास जी ने रामचरितमानस के स्थान पर श्रीमद् भागवत गीता के प्रवचनों का मुख्य आधार बनाया।

परनामी सम्प्रदाय

प्रवर्तक	–	प्राणनाथ
दर्शन	–	निर्गुण निराकर परम बह्म
अन्य पीठ	–	आदर्शनगर, जयपुर (अलग बस्ती)
मुख्य पीठ	–	पन्ना-मध्यप्रदेश
रचना	–	कुलजम स्वरूप
प्रमुख उपदेश	–	आराध्यदेव श्रीकृष्ण के प्रणाम करना मूल दर्शन।

लकुलीश/पाशपत सम्प्रदाय

प्रवर्तक	–	लकुलीश
मुख्यपीठ	–	एकलिंग शिव मन्दिर कैलाशपुरी उदयपुर
अन्य मन्दिर	–	सुन्धा माता मन्दिर जालौर में लकुलीश सम्प्रदाय की शिवमूर्ति
सम्बन्धि ग्रन्थ	–	एकलिंग महात्म्य
प्रमुख	–	मेवाड़ के हारित ऋषि लकुलीश सम्प्रदाय के प्रमुख साधु।
	–	एकलिंग मन्दिर का निर्माता बप्पा रावल।
	–	कुम्भा ने इस मन्दिर को नागदा, कालोडा, मालखेड़ा, भीमाना गाँव भेट किए।
	–	जिस तरह जयपुर के शासक स्वयं को गोविन्द जी का दीवान मानते है उसी तरह मेवाड़ के शासक स्वयं को एकलिंग जी का दीवान मानकर शासन करते थे।
नोट	–	लकुलिश को शिव का 28 वाँ अवतार मानते है।

नाथ सम्प्रदाय

आदिप्रवर्तक	–	नाथ मुनि
प्रमुख प्रचारक	–	मत्स्येन्द्रनाथ
प्रमुख पीठ	–	सिरे मन्दिर जालौर
अन्य पीठ	–	राताडूंगा, पुष्कर अजमेर
	–	महामन्दिर जोधपुर
विशेष	–	राजस्थान में नाथ सम्प्रदाय की दो शाखाएँ प्रसिद्ध है। **1. वैराग्यपंथ** मुख्य राताडूंगा (अजमेर) **2. माननाथी पंथ** मुख्यपीठ महामन्दिर (जोधपुर)
नोट	–	नाथ सम्प्रदाय का मूलतः संबंध शैव सम्प्रदाय से होता है लेकिन जालौर का सिरे मन्दिर का संबंध वैष्णव मत के नाथो से है।
	–	नाथ सम्प्रदाय के 12 1/2 पंथों में से एक पंथ कानपा पंथ का प्रवर्तक जालन्धर नाथ का शिष्य कानपा नाथ था जिसे कालबेलिया अपना गुरू मानते है।

निरंजनी सम्प्रदाय

प्रवर्तक	–	हरिदास जी
मूलनाम	–	हरिसिंह साखला
मुख्यपीठ	–	गाढ़ा, डीडवाना, नागौर
रचना	–	मन्त्र राजप्रकाश, हरिपुरूष जी की वाणी
जन्म स्थान	–	कापडोद गाँव डीडवाना
तिथि	–	1455 ई. में
प्रमुख उपदेश	–	निरंजन शब्द को परमात्मा तत्व का प्रतीक मानते है इसलिए इस ही शब्द की उपासना पर बल देते है।
प्रमुख मंत्र	–	अलख निरंजन
	–	हरि निरंजन
	–	राम निरंजन
	–	मूलतः निर्गुण भक्ति का उपदेश देता है लेकिन सगुण उपासना व मूर्तिपूजा का विरोध नहीं करते हैं।
नोट	–	सम्प्रदाय के दो प्रकार के अनुयायी- 1. **निहंग** (खाकी रंग की गुदड़ी गले में डालकर रहने वाले) 2. **घरवारी** (गृहस्थी जीवन बिताते हुए सम्प्रदाय में आस्था रखने वाले)
नोट	–	हरिदास जी मूलतः डाकू के थे इसलिए इन्हे **कलियुग का वाल्मिकी** कहा जाता है।

गूदड़ सम्प्रदाय

प्रवर्तक	–	सन्तदास जी
दर्शन	–	निर्गुण भक्ति
मुख्यपीठ	–	दाँतड़ा (भीलवाड़ा)
अनुयायी	–	गूदड़ी से बने वस्त्र धारण करते है।

नवल सम्प्रदाय

प्रवर्तक	–	नागौर के हस्लाव गाँव में जन्मे नवलदास जी
मुख्यपीठ	–	जाधेपुर
रचना	–	नवलेश्वर अनुभव वाणी

राजाराम सम्प्रदाय

प्रवर्तक	–	राजाराम
मुख्यपीठ	–	शिकारपुरा (जोधपुर)

विशेष - विश्नोई सम्प्रदाय के समान इस सम्प्रदाय के लोग हरे वृक्षों के प्रति संवेदनशील होते है।

दादूपंथ सम्प्रदाय

प्रवर्तक - दादू जी
मुख्यपीठ - नरैना/नरायणा की भैराण पहाड़ी, जयपुर
रचना - दादूजी वाणी, दादूजी रा दोहा (हिन्दी मिश्रित साधुकड़ी भाषा में)
दर्शन - निर्गुण निराकार निरंजन परम बह्म
जन्म स्थान - अहमदाबाद
जन्मतिथि - 1544/वि.स. 1601
गुरू - कबीर के शिष्य वृद्धानन्द जी
विशेष - किवदन्ती है दादू जी लोदी नामक व्यक्ति को बहते हुए सन्दूक में मिले थे।
- दादूजी 1568 में सांभर आ गये।
- मानसिंह के समकालिक दादू जी ने 1585 में फतेहपुर सीकरी की यात्रा करके अकबर से मुलाकात की थी।
- 1602 मे नरैना आ गए।

मृत्यु - नरैना में 1605 में
- दादूजी के 152 शिष्य थे जिनमें से 5 गृहस्थी व 52 साधु थे।
- 52 साधुओं को दादूपंथ के 52 स्तम्भ (थम्भे) कहा जाता है।
- दादूजी के प्रमुख शिष्यों में गरीब दास, मिस्किन दास के अलावा माघवदास, सुन्दरदास, सन्तदास, रज्जब जी, बकनाजी।

दादूपंथ की छः शाखाएँ है-

1. खालसा - **मुखिया**-गरीबदास
2. नागा मुखिया-सुन्दरदास
विशेष - हथियार रखकर जयपुर रियासत के लिए दाखिली सैनिक के रूप में कार्य करते थे। लेकिन इनके आतंक से परेशान होकर जयसिंह ने इनके शस्त्रों पर पाबन्दी लगा दी।
3. विरक्त शाखा - घूमते-फिरते (गृहस्थियों को उपदेश देने वाले)
4. खाकी - शरीर पर भस्म (खाकी वस्त्र धारक)
5. उत्तरादेय - राजस्थान छोड़कर उत्तरी भारत में जाने वाले।
6. निहंग - घुमक्कड़ साधु

प्रमुख उपदेश - निर्गुण निराकार निरंजन बह्म की उपासना
- अहम् बाह्य-आडम्बर व जातिगत भेद का विरोध
- ढ़ोंगी साधुओं का विरोध
- दादूपंथी अविवाहित रहते थे तथा किसी लड़के को गोद लेकर अपना शिष्य बनाते थे।
- दादूपंथी सबको पशु-पक्षियों को खाने के लिए जंगल में छोड़ देते थे।
- दादूपंथ को सत्संग को ''अलखदरिबा'' कहा जाता है।
- दादू जी के उपदेश 5000 छन्दो में है।
- सुन्दरदास ने दार्शनिक सिद्धान्तों नानमार्गी पद्धति में पद्यबद्ध किया था।
- लोकभाषा में निर्गुण भक्ति को फैलाने वाले दादूजी को राजस्थान का कबीर कहते है।
- सतनाम कहकर अभिवादन करते है।

तेरापंथी सम्प्रदाय

प्रवर्तक - भीखण जी (आचार्य भिक्षु स्वामी)
जन्म स्थान - कंटालिया (जोधपुर)।
तिथि - 1750 ई. तेरापंथ की स्थापना।
प्रमुख - राजस्थान की श्वेताम्बर जैन धर्म शाखा
- आरंभिक साधुओं की संख्या 13 थी।

संत

संत रज्जब जी

- जन्म-सांगानेर (जयपुर) 16वीं सदी में, जीवन भर दूल्हे के वेश में रहे।
- ग्रन्थ-रज्जब वाणी, सर्वगी, ह्रड़ेबानी (पिंगल भाषा)।
- मृत्यु सांगानेर (प्रधान गद्दी)।

संत पीपा (1383-1453)

- जन्म-गागरोण (झालावाड़)
- पिता-कड़ावा राव खीचीं माता-लक्ष्मीवती।
- बचपन का नाम-प्रतापसिंह।
- गुरू-रामानंद।
- दर्जी समुदाय के आराध्य देव।
- समदड़ी (बाड़मेर) पीपाजी का मंदिर।
- टोडाग्राम (टोंका) पीपाजी की गुफा।
- फिरोजशाह तुगलक को पराजित किया।
- मृत्यु -टोडाग्राम (टोंका)।
- भक्ति आंदोलन की अलख जगाने वलो प्रथम संत।
- निर्गुण भक्ति के संत।
- राजपाट अपने भाई अचलदास खींची के पक्ष में त्याग दिया व सन्यासी बने।
- चैत्र पूर्णिमा को बाड़मेर में मेला।
- रानी सोलखड़ी पदमावती ने पीपाजी के साथ भक्ति ज्ञान में सहयोग दिया (20 रानियां थी)
- मंदिर- समदड़ी (बाड़मेर), गागरोन (झालावाड़), मसुरिया (जोधपुर)।

संत धन्नाजी

- जन्म-धुवनग्राम (टोंका), जाट परिवार में।
- संत रामानन्द के शिष्य।
- राजस्थान छोड़कर वृदांवन चले गये।

भक्त कवि दुर्लभ

- **जन्म**-वागड़ क्षेत्र
- राजस्थान का नृसिंह
- बांसवाड़ा व डूंगरपुर को अपना कार्य क्षेत्र बनाया।

संत रैदास

- **जन्म**-बनारस (यू.पी. रामानन्द जी के शिष्य। चमार जाति। **उपनाम**-संतों का संत।
- आडम्बरों एवं भेदभावों का विरोध किया।
- निर्गुण ब्रह्म की भक्ति का उपदेश।
- मीरा के समय चित्तौड़ आये।
- छतरी चित्तौड़ दुर्ग के कुंभश्याम मंदिर में।
- मीरा बाई के गुरू, कबीर ने रैदास को **संतो का संत** कहा।

महिला संत

मीराबाई (1498-1548)

- जन्म-1498 ई. (कुड़की ग्राम, पाली) पिता-रतनसिंह राठौड़, माता-वीर कंवरी, बचपन का नाम-प्रेमल, शिक्षक -पं. गजाधर, गुरू-रैदास। विवाह-भोजराज(महाराणा सांगा के पुत्र)
- भक्ति-मार्धुय भाव व सखा भाव। मीरा की तुलना सूफी संत रूबीया से की गई।

- राणा रतनसिंह तथा विक्रमादित्य ने मीराबाई को यातनाएं दी। मंदिर-चित्तौड़गढ़ में इण्डो आर्य शैली में निर्मित ।
- उपनाम-राजस्थान की राधा, संत शिरोमणी।
- दासी सम्प्रदाय की स्थापना की ।
- प्रथम ऐतिहासिक महिला जिस पर 1952 ई. को डाक टिकट।
- ग्रन्थ-सत्यभामाजी, नू रूसणों, पदावली, राग गोविन्द (टीका), नरसी मेहता नी हुंडी रूक्मणी मंगल, गीत गोविन्द टीका, राग टीका। नरसी जी रो मायरो-ब्रजभाषा की यह रचना मीरा के निर्देशन में रतना खाती द्वारा की गई।
- द्वारिका (गुजरात) के रणछोड़ मंदिर में अपने गिरधर गोपाल की मूर्ति में विलीन हो गई।

राना बाई

- हरनावा गावं (उदयपुर)।
- इन्होने 'चुकटी आटा भिक्षा' नियम का प्रतिपादन किया।

फूलीबाई

- जन्म-मझवास गांव (जोधपुर),
- जोधपुर महाराजा जसवंत सिंह की समकालीन।
- जाट परिवार की फलीबाई को महाराज ने धर्म बहिन बनाया था।

सहजोबाई

- अलवर, संत चरणदास की कृष्ण भक्त शिष्या मध्यकाल में राज्य की प्रथम महिला संत (महंत) सहज प्रकाश, सोलह तिथि व सब्द्वाणी ग्रन्थों की रचना की।

ताजबेगम

- सीकर, फतेहपुर के कायमखानी नवाब फदन खॉ की शहजादी, कृष्ण भक्त।

समानबाई चारण

- माहुद गांव (अलवर)।
- जीवन भर आँखों पर पट्टी बांधे रखी ताकि किसी अन्य को न देख सके। राधा-कृष्ण की उपासना की।

महात्मा भूरीबाई

- 1892 ई. सरदारगढ़ (उदयपुर) के सुथार परिवार में जन्म, नाथद्वारा के विधुर फतहलाल से विवाह।
- देवगढ़ की मुस्लिम योगिनी नूराबाई से मिलने पर इन्हे वैराग्य प्राप्त हुआ।

भोली गूजरी

- करौली
- कृष्ण के मदनमोहन स्वरूप की उपासिका ।

ज्ञानमती बाई

- जयपुर
- इनकी 50 वाणियां आत्माराम परम्परा के संतो के साथ संकलित।

गवरी बाई

- **जन्म**-संवत् 1515 (डूंगरपुर शहर) ।
- वागड़ की मीरा।
- शिवसिंह ने गवरी बाई के लिए डूंगरपुर में मंदिर बनवाया (बाल मुकुन्द मंदिर)

अन्य

- महिला संतरानी रत्नावली :- अलवर।
- रानी अनुपकंवरी :- किशनगढ (अजमेर)।
- रानी पार्वती सोलंकी :- पाली।
- सुमति झाली :- कुंभलगढ़ (राजसमंद)।
- बाला भाई अपूर्वदे :- बीकानेर, राव लुणकरण की पुत्री, आमेर नरेश पृथ्वीराज कच्छवाहा की रानी। इन्होने वैष्णव दीक्षा ली। श्री हरि के नर सिंह अवतार की उपासिका थी। आमेर में वैष्णव भक्ति मत का बीजारोपण किया।
- करमेत्ती बाई :- खण्डेला (सीकार), प्रसिद्ध कृष्ण भक्त।
- करमाबाई :- अलवर।

राजस्थान के मुस्लिम पीर

ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती

- गरीब नवाब,
- जन्म-सजरी गांव (ईरान)
- पृथ्वीराज चौहान तृतीय के समय अजमेर आगमन
- गुरू-शेख हारून उस्मान चिश्ती,
- 1 रज्जब से 9 रज्जब तक उर्स
- भारत में चिश्ती सिलसिले के संस्थापक
- अकबर पुत्र प्राप्ति की जियारत करने अजमेर आया।

नरहड़ के पीर

- हजरत शक्कर बाबा पीर के नाम से लोकप्रिय,
- दरगाह नरहड़ (चिडावा, झुंझुनू) में
- बांगड़ के धणी।
- कृष्णा जन्माष्टमी को उर्स लगता है।
- शेख सलीम चिश्ती इनके प्रमुख शिष्य।

संत काजी हमीदुद्दीन नागौरी

- मुहम्मद गौरी के साथ भारत आगमन,
- उपनाम-सुल्तान तारकीन (त्याग का सम्राट),
- सन्यासियों का सुल्तान
- दरगाह-नागौर में।
- भारत में कादरिया सम्प्रदाय की सबसे बड़ी दरगाह है।

सैय्यद सेफ़ुद्दीन अब्दुल बहाव (बड़े पीर)

- कादरिया शाखा के संस्थापक,
- बडे पीर नाम से प्रसिद्ध।
- दरगाह-नागौर में।

संत मीठे शाह

- वास्तविक नाम हमीदुद्दीन,
- ज्येष्ठ शुक्ला एकम से (चाँद दिखने पर)।
- गागरोन (झलवाड़) मे दरगाह।
- 1303 ई. खुरासान से गागरोण आये।

ख्वाजा फ़खरूद्दीन चिश्ती

- दरगाह- सरवाड़ (अजमेर),
- ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के पुत्र।
- राजस्थान का मिनी उर्स लगता है।

राजस्थानी साहित्य की कृतियाँ, क्षेत्रीय बोलियाँ

- **राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति**-नागर अपभ्रंश या शौरसेनी के गुर्जरी अपभ्रंश से मानी जाती है।(12वीं शताब्दी)
- डॉ. एल.पी. तेस्सितोरी ने राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश से 12वीं सदी के मध्य होना बतायी।
- राजस्थानी भाषा का उद्‌भव 9 वीं से 11 वीं सदी के मध्य।
- साहित्य रचना के प्रमाण 13 वीं शताब्दी से।
- राजस्थानी भाषा का स्वतंत्र विकास 16 वीं शताब्दी से माना जाता है।
- राजस्थानी भाषा का आधुनिक काल 18 वीं शताब्दी से हुआ।
- सर्वप्रथम 778 ई. में उद्योतन सूरी द्वारा लिखित कुवलय माला ग्रंथ में 18 देशी भाषाओं में **मरूभाषा** का उल्लेख।
- कवि कुशल लाभ के पिंगल शिरोमणी ग्रंथ में मारवाड़ी शब्द का उल्लेख।
- अबुल फजल के आइने अकबरी में मारवाड़ी शब्द का उल्लेख।
- राजस्थानी शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग **जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन** ने 1912 ई. में Lunguistic Survey of India ग्रंथ में किया।
- राजस्थानी भाषा की **सर्वप्रथम वर्गीकरण** जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन द्वारा पश्चिमी राजस्थानी, मेवाड़ी, मारवाड़ी, वागड़ी शेखावटी (1907-08 में)।
- मध्य पूर्वी राजस्थानी -ढूंढाड़ी, हाड़ौती
- उत्तरी पूर्वी राजस्थानी-मेवाती अहिरवाटी
- दक्षिण -पूर्वी राजस्थानी -मानवी, नीमाड़ी।
- 1829 ई. **राजस्थान शब्द** का सर्वप्रथम प्रयोग **कर्नल जेम्स टॉड** ने।
- 1800ई. **राजपूताना शब्द** की सर्वप्रथम प्रयोग **जॉर्ज थामस** ने।
- **राजस्थानी भाषा लिपि**-देवनागरी, महाजनी (देवनागरी लिपि का विकृत रूप)
- राजस्थानी **भारोपीय परिवार** की भाषा।
- राजस्थानी में मुख्यत: 73 बोलियां बोली जाती है। (1961 की जनगणना के अनुसार) भारतीय भाषाओं एंव बोलियों में राजस्थानी की 7 वां विश्व भाषाओं में 24 वां स्थान है।
- मौर्यकाल में राजस्थान में प्राकृत भाषा प्रचलित थी।
- राजस्थानी भाषा राजस्थान, मध्यभारत के पश्चिमी भाग, मध्यप्रांत, सिंध तथा पंजाब के निकटवर्ती क्षेत्रों में बोली जाती है।
- राजस्थानी बोलने वालों की संख्या 6 करोड़ के लगभग है।
- राजस्थानी भाषा का सर्वाधिक साहित्य डिंगल शैली में लिखा गया है। राजस्थानी भाषा के साहित्य को हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक काल का साहित्य माना जाता है।

राजस्थानी साहित्य का प्रारंभिक काल-राजस्थानी भाषा में 1460 ई. तक जो साहित्य लिखा गया इसे प्रारंभिक काल का साहित्य माना जाता है।

राजस्थानी साहित्य का पूर्व मध्यकाल-1460 ई. से 1700 ई. तक का साहित्य। इस काल में श्रृंगार और भक्ति के साथ वीर पुरूषों की कीर्तिगाथा रचनाकारों के मुख्य विषय रहे।

राजस्थानी साहित्य का उत्तर मध्यकाल-1700 से 1857 ई. तक का साहित्य। इस काल में वीरता श्रृंगार, भक्ति तथा नीति प्रधान रचनाओं का लेखन अधिक। राजस्थानी साहित्य का स्वर्ण युग।

राजस्थानी साहित्य का आधुनिक काल-1857 के बाद का साहित्य। राजस्थानी साहित्य में राजनैतिक और सामाजिक चेतना के साथ ब्रिटिश शासन तथा सामंत शाही के विरूद्ध स्वर उभरा।

- रचनाकार-सुर्यमल्ल मिश्रण, बख्तावर जी, केसरीसिंह बारहठ, नाथसिंह महियारिया, उदयराज उज्जवल।
- राजस्थानी भाषा का **वृहद् शब्द कोश** लिखने का महत्वपूर्ण कार्य आधुनिक काल में जोधपुर के **सीताराम लालस** ने किया
- **ब्रदीप्रसाद साकरिया** ने एक राजस्थानी शब्दकोश तैयार किया।

राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी बीकानेर-
- राजस्थानी भाषा की पुस्तकों पर पुरस्कार ।
- जागती जोत मासिक पत्रिका प्रकाशित

डिंगल

- 15 वीं शताब्दी के बाद पश्चिमी राजस्थानी में प्रचलित साहित्यिक शैली को डिंगल कहते है।
- राजस्थानी की सर्वप्रथम साहित्यिक शैली है।
- मारवाड़ी की साहित्यिक शैली का रूप।
- शब्द ठीक उसी प्रकार लिखा जाता है। जिस प्रकार बोला जाता है।
- मुख्यत: चारणों द्वारा प्रयोग में लाई जाती है।
- यह गद्य साहित्यिक रचना की शैली है।
- डिंगल भाषा का सर्वप्रथम प्रयोग विक्रम संवत् 1607 -08 में **कुशल लाभ** रचित **पिंगल शिरोमणि** नामक ग्रंथ में किया गया।
- सर्वप्रथम डिंगल शब्द का प्रयोग विक्रम संवत् 1817 में जोधपुर रियासत के कवि बांकिदास की रचना **कुकवि बत्तीसी** में किया गया।
- डिंगल के विकास का श्रेय डॉ. एल.पी. टैस्सीटोरी को जाता है।
- पश्चिमी राजस्थानी का साहित्यक रूप माना जाता है।
- राजस्थानी भाषा का सर्वाधिक साहित्य डिंगल में रचा गया है।

डिंगल भाषा की प्रमुख रचनाएँ

- अचलदास खीची री वचनिका — शिवदास गाढ़ण
- राव जैतसी रो घंड — बीठू सूजा
- महेश दासौत री वचिनका — खिडिया श्रग्गा
- रूक्खमणी हरण — पृथ्वीराज राठौड़
- नाग दमण — पृथ्वीराज राठौड
- सगत रासौ — गिरधर आशिया
- ढोला मारू रा दुहा — कवि कल्लोल
- राजरूपक — वीरभाण

पिंगल

- यह भाटो की काव्य शैली है जो पूर्वी राजस्थानी का ब्रज मिश्रित रूप है।
- विकास शौरसेनी अपभ्रंश से। इसमें पद्य की रचना अधिक हुई है।
- बृज भाषा एवं पूर्वी राजस्थानी की साहित्यक रूप है।
- रचनाएं- पृथ्वीराज रासौ-चन्दरबरदाई। वंश भास्कर-सुर्यमल्ल मिश्रण। खुमाण भास्कर-दलपति विजय।
- ऐतिहासिक भौगोलिक एवं भाषा वैज्ञानिकी के आधार पर राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति गुर्जर अपभ्रंश से।
- **सरदास पटेल**-राजस्थानी वीरों की भाषा है। राजस्थानी की साहित्य वीर साहित्य संसार के साहित्यों में उसका निराला स्थान है।

- यदि भाषाओं का क्रमिक विकास देखा जाए तो प्राकृत भाषा से डिंगल भाषा प्रकट हुई तथा डिंगल भाषा में गुजराती और मारवाड़ी भाषाओं का विकास हुआ जबकि संस्कृत भाषा से पिंगल भाषा प्रकट हुई तथा पिंगल भाषा से ब्रज भाषा एवं खड़ी हिन्दी का विकास हुआ ।

मारवाड़ी

- राजस्थानी भाषा की मानक बोली। पश्चिमी राजस्थान की प्रधान बोली।
- सबसे बड़े क्षेत्र में व सर्वाधिक बोली जाने वाली बोली। विशुद्ध केन्द्र-जोधपुर।
- उत्पत्ति-गुर्जरी अपभ्रंश से।
- साहित्यिक रूप को डिंगल कहते है।
- आरंभकाल 8वीं शताब्दी से।
- जैन साहित्य एवं मीरा के पद इसी में।
- अबुलफजल ने आइने अकबरी व कवि कुशल लाभ ने पिंगल शिरोमणि में मारवाड़ी शब्द का प्रयोग किया। मारवाड़ी का सर्वप्रथम व्याकरण रामकरण आसोप ने लिखा।
- सोरठा, छंद व राग इसकी शिल्पगत विशेषता।
- सामान्यत: देवनागरी लिपि परन्तु बहिखातों में महाजनी लिपि का प्रयोग किया जाता है।
- उपबोलियों -मेवाड़ी, बागड़ी, शेखावटी, बीकानेर, ढटकी, थली, खेराड़ी नागौरी, देवड़पाडी गौड़वाड़ी।

मेवाड़ी

- उदयपुर एवं उसके आस-पास के क्षेत्र में प्रमुख रूप से बोली जाती है।
- महाराणा कुंभा के नाटक इसी में।
- मारवाड़ी व मेवाड़ी में मुख्य अंतर क्रिया के व्यवहार।
- विकास 12 वीं व 13 वीं सदी में।

ढूंढाड़ी

- पूर्वी राजस्थान की प्रधान बोली। जयपुर-किशनगढ़, टोंक, दौसा, अजमेर में प्रचलित।
- गुजरात एवं ब्रज भाषा का प्रभाव।
- दादूदयाल का साहित्य इसी में।
- गद्य-पद्य दोनों में प्रचुर साहित्य।
- तीसरी प्रमुख बोली। जयपुरी या झाड़शाही कहते है।

उप बोलियाँ -

- **राजावाटी**-जयपुर जिले के पूर्वी भाग (दौसा की क्षेत्र)
- **काढेड़ी**-जयपुर के दक्षिण भाग में (टोंक क्षेत्र में)
- **चौरासी**-जयपुर के दक्षिण-पश्चिमी भाग में (शाहपुरा, टोंक, अजमेर क्षेत्र)
- **तोरावाटी**-झुंझुनू जिले का दक्षिणी भाग में, सीकर जिले के पूर्वी भाग एवं दक्षिण पूर्वी भाग तथा जयपुर जिले के उत्तरी भाग में।

  नोट-दिल्ली के तोमर राजपूतों का निवास स्थान होने के कारण तारावाटी कहते है।
- **नागर चोल** - सवाई माधोपुर जिले के पश्चिमी व टोंक जिले के दक्षिण पूर्वी भाग में।

हाड़ौती

- कोटा, बूंदी, बाराँ, झालावाड़ क्षेत्र में। इसमें साहित्य अल्प मात्रा में लिया गया। चौथी प्रमुख बोली।
- सूर्यमल्ल मिश्रण की रचनाएँ इसी में। जयपुरी और हाड़ौती में विशेष अंतर नहीं है।
- हाड़ौती का भाषा के अर्थ में प्रयोग सर्वप्रथम केलॉग की हिन्दी ग्राम में सन् 1875 ई. में। जब, इसमें कब व तब के लिए जद, कद, तद का प्रयोग।

मेवाती

- अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करोली क्षेत्रों में। मुख्यत: अलवर, भरतपुर में।
- पूर्वी राजस्थान की सबसे प्रमुख बोली। ब्रजभाषा का प्रभाव। पांचवी सबसे बड़ी बोली।
- पश्चिमी हिन्दी व राजस्थानी के मध्य कड़ी।
- संत लालदास, चरणदास, दयाबाई, सहजोबाई की रचनाएँ इसी भाषा में।

अहीर वाटी

- पूर्वी राजस्थान की दूसरी महत्वपूर्ण बोली। बहरोड़, मुडावर (अलवर), कोटपुतली (जयपुर) क्षेत्र में।
- नीमराना के राजा चन्द्रभान सिंह चौहान के दरबारी कवि जोधराज ने हम्मीर रासौ की रचना की, में अरीरवाटी का उल्लेख मिलता है।
- कवि शंकरराव ने **भीम विलास** की रचना।
- अल्ली बक्शी की रचनाएं।
- इस बोली के क्षेत्र को राठ कहते है। इसलिए इसका नाम राठी भी है।

बागड़ी

- डूंगरपुर, बांसवाड़ा क्षेत्र।
- गुजराती का प्रभाव।
- इसे भीली बोली कहते है।

मालवी

- कोटा, झालावाड़, प्रतापगढ़ में।
- मारवाड़ी व ढूंढाड़ी की मिश्रित प्रभाव। मराठी का प्रभाव।
- कर्णप्रिय व कोमल बोली।
- उपबोलियां-नीमड़ी, उमठावाडी, सौंधवाड़ी।
- **नीमड़ी**-दक्षिणी राजस्थानी कहते। गुजराती, भीली व खानदेशी का प्रभाव।
- **रांगड़ी**-मालवा के राजपूतों की बोली। मेवती व मारवाड़ी का मिश्रण कर्कश बोली।
- **खैराड़ी**-शाहपुरा(भीलवाड़ा) व बूंदी के कुछ क्षेत्रों में। मेवाड़ी, ढूंढाड़ी हाड़ौती का मिश्रण।
- **गौड़वाड़ी**-जालौर व पाली क्षेत्र में। बीसलेदव रासौ की रचना। उपबोलियां -बालवी खणी महाहड़ी।

राजस्थान के प्रमुख साहित्यकार

मुहणौत नैणसी

- जन्म-जोधपुर नगर के दीवान जयमल मुहणोत के यहां विक्रम संवत् 1667 (1610ई.)।
- विक्रम संवत् 1727 (1670 ई.) फुलवारी गांव **(औरंगाबाद)** में कटार घौंपकर आत्महत्या।
- महाराजा जसंवत सिंह प्रथम के दरबारी कवि/दीवान।
- मुशीदेवी प्रसाद ने राजपूताने का अबुल फजल कहा।
- आधुनिक जनगणना का अग्रज।
- अकबर के आदेश से अकबर नामा तथा आईने अकबरी में मुगल साम्राज्य के 12 सूबों का विस्तृत वर्णन फारसी भाषा में लिखा।
- **ग्रंथ-1 मारवाड़ रा परगना री विगत**-इसे **राजपूताने का गजेटियर** कहते है। मारवाड़ के परगनों, परगनों के गांव, कृषि व्यवस्था, अर्थव्यवस्था का वर्णन।
- **ग्रंथ-2 मुहणौत नैणसी री ख्यात**-मध्यकालीन राजस्थान के सभी राज्यों एवं प्रदेशों, उनके शासकों तथा गुहिलों व राजपूतों

की 36 शाखाओं का वर्णन। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक स्थिति का वर्णन। सबसे प्राचीन व विश्वसनीय ख्यात है।
- **रामनारायण दुग्गड़ ने**-''मुहणौत नैणसी री ख्यात'' का हिन्दी अनुवाद किया है।

डॉ. लुइजिपिओं तैस्सितोरी
- **जन्म**-उदिने शहर (इटली) 13 दिसम्बर, 1887। निधन-22 नवम्बर, 1919 (बीकानेर) महाराजा गंगासिंह के समकालीन। कालीबंगा की खोज का श्रेय जाता है।
- राजस्थाने के इतिहास, मातृभाषा और साहित्य को संसार के सामने लाने का श्रेय जाता है।
- बीकानेर म्यूजियम इनकी देन।
- राजस्थानी चारण साहित्य एवं ऐतिहासिक सर्वे तथा पश्चिमी राजस्थानी की व्याकरण नामक पुस्तकें लिखी। रामचरितमानस व रामायण का **इटली भाषा में अनुवाद** किया।
- वेलि किसन रूख्मणी री एवं छंद जैतसीरो के सम्पादन का श्रेय जाता है।
- **धोरॉ री धोरी (टिब्बों का मसीहा)** - श्री नथमल जोशी द्वारा लिखित यह ग्रंथ तेस्सतोरी की जीवनी पर आधारित है।

सूर्यमल्ल मिश्रण (सूरजमल)
- **राजस्थान का वेदव्यास**-वास्तविक नाम सूरजमल, जन्म-विक्रम संवत् 1872 ई. (बुंदी, हरणीगांव)।
- राजस्थान में नवजागरण के प्रथम कवि,महाराव रामसिंह के दरबारी कवि।
- ग्रंथ-वंश भास्कर (पिंगल) बलवन्त विलास, छंददोम्यूख धातु रूपावली, सती रासो, चित्रकला, दर्शनशास्त्र के विद्वान। वंश भास्कर को इनके दत्तक पुत्र मुरारीदान ने पूर्ण की।

श्यामलदास दधवड़िया
- जन्म-ढोलकिया (भीलवाड़ा) मेवाड़ महाराणा सज्जनसिंह के कृपापात्र। महाराणा ने 'कविराज' की उपाधि दी। अग्रेंज सरकार ने इनको महामहोपाध्याय' की उपाधि दी।
- मेवाड़ के पॉलिटिकल एजेन्ट कर्नल हम्पी ने **केसर-ए-हिन्द** की उपाधि दी।
- रचना-वीर विनोद (मेवाड़ का इतिहास शामिल)

मुंशी देवीप्रसाद
- जन्म-जयपुर।
- उपनाम- आधुनिक इतिहास के उन्नायक मारवाड़ राज्य के कानून के निर्माता, कानून की माता।
- कोहिनूर -सामाचार पत्र अजमेर से प्रकाशित करवाया।
- सामाजिक इतिहास लेखन की परम्परा को शुरू किया।
- ग्रंथ-राजा भारमल, रूठी रानी, परिहारों का इतिहास, सांगा, महिला मृदुवाणी, कवि रत्नमाला, मारवाड़ की कृष्णा कुमारी बाई, औरंगजेब नामा।
- जोधपुर महाराजा जसंवत सिंह II के यहां मुशी का कार्य किया।

बाँकीदास
- जन्म-पचपदरा (भांडिया वास), बाड़मेर (1828 ई.)। परम्परागत चारण शैली व प्राचीन डिंगलभाषा के अग्रणी रचनाकार।
- जोधपुर महाराजा मानसिंह के काव्य गुरू।
- बांकीदास री ख्यात प्रमुख ग्रंथ।
- इनको मारवाड़ का बीरबल कहते है।
- प्रमुख ग्रंथ-गुरजाल भूषण, मानज, सोमण्डन, दातार बावनी, कुकवि बत्तीसी, नीति मंजरी, सूर छतीसी, धवल पच्चीसी, कृपण, दर्पण।
- ईस्ट इण्डिया कम्पनी की काली करतूतों के विरूद्ध जनजागरण का शंखनाद करने वाला इस देश का प्रथम कवि। उनका लोकप्रिय डिंगल गीत-आयो अग्रेंज मुल्क रै ऊपर।

ईसरदास बारहठ (1538-1618)
- जन्म-भादरेस (बाड़मेर)।
- उपाधि-ईसरो परेमसरो।
- डिंगल के प्रारम्भिक कवि एवं चारण कवियों मे शिरोमणी।
- प्रसिद्ध ग्रंथ-हाला झाला री कुडलियां (सूरसतसई), हरिरस, देवीयाण, गुणआगम, गुण रासलीला, गुण भागवत हंस, गरूड़ पुराण।
- ईसरदास की डिंगल भाषा की सर्वोकृष्ठ कृति गुण हरिदास।

पृथ्वीराज राठौड़ (पीथल)
- जन्म बीकानेर (1548)। कल्याण मल के पुत्र अकबर के दरबारी कवि।
- रचना-वेलिक्रिसन रूक्माणी री (राजस्थानी भाषा का सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ)
- तेस्सीटोरी ने **डिंगल का हेरोस** कहा।
- अन्य रचनाएँ- ठाकुर जी रा दूहा, गंगा जी रा दूहा, दशम भागवत रा दूहा, फुटकर पद, गंगालहरी।
- कर्नल जेम्स टॉड ने पीथल के लिए कहा था कि इनके काव्य में **दस हजार घोड़ो का बल** है। नाभादास ने इनकी गणना **भक्तमाल** से की।
- दुरसा आढा ने वेलि क्रिसन रूक्मणी को **पांचवा वेद** कहा।
- रानी-चंपादे (परम सुंदरी एवं कला मर्मज्ञ)।
- अकबर ने गागरोण का किला जागीर में दिया।

कर्नल जेम्स टॉड
- जन्म-20 मार्च 1782 स्कॉटलैण्ड (इंगलैण्ड)।
- राजस्थान इतिहास के पितामह। प्रांरभ में ईस्ट इंडिया कम्पनी के उच्च सेनाधिकारी।
- 1817 ई. पश्चिमी राजस्थान के पॉलिटिकल एजेन्ट बनकर सर्वप्रथम उदयपुर आये।

उन्होने प्रमुख ग्रंथ लिखे -

(1) एनाल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान
- इसके दो भाग है, जिसमें 85 अध्याय है।
- प्रथम भाग में राजस्थान की भौगोलिक स्थिति, राजाओं की वंशावली, शासन व्यवस्था, मेवाड़ की स्थिति।
- दूसरे भाग में मारवाड़, अजमेर, बीकानेर, जैसलमेर व हाड़ौती आदि राज्यों का वर्णन
- प्रथम प्रकाशन 1829 ई.। इसमें सर्वप्रथम राजस्थान शब्द का प्रयोग किया।

(2) पश्चिमी राजस्थान की यात्रा-
- राजपूतों की मान्यताएं, परम्पराओं, मंदिरों और आदिवासी जनजीवन का चित्रण।
- कर्नल टॉड के अनुसार-राजस्थान का कोई छोटा सा राज्य नहीं जिसमें धर्मोपल्ली जैसी रणभूमि न हो और शायद ही कोई ऐसा नगर मिले जहां लियोनीडस जैसा वीर पुरूष उत्पन्न न हुआ हो। निधन-17 नवम्बर 1835।

विजयदान देथा
- जन्म-बोरून्दा गांव (बिलाड़ा, जोधपुर) 1926।
- विज्जी नाम से लोकप्रिय।

- **बाता री फुलवारी** शीर्षक से राजस्थानी भाषा में 12 खंडों में प्रकाशित ग्रंथ।
- रचनाएँ – रूंख, उलझन, सपन प्रिया, द दिलेमा, कंचूली, अलेखू हिटलर, दुविधा (पहेली फिल्म वनी)। 2007 पदमश्री से सम्मानित।
- राजस्थानी हिन्दी कहावत कोष के रचनाकार।
- बातां री फुलवारी के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार (1974)

कन्हैयालाल सेठिया

- जन्म-सुजानगढ़ (1919)। मृत्यु-2008।
- राजस्थानी और हिन्दी के सिरमौर कवि।
- धरती धोरा री लोकप्रिय कविता।
- रचनाएं-धरती धोरा री, पातल और पीथल, वनफूल (प्रथम काव्य संग्रह), लीलटांस, सबद, देह विदेह, रमणियें रा दूहा, अघोरी काल।
- लीलाटांस पर साहित्य अकादमी पुरस्कार।
- शब्द पर सूर्यमल्ल मिश्रण पुरस्कार।

राजस्थानी साहित्य के विभिन्न रूप

- **रासो**-वीरता परक काव्यों को रासो कहा गया है। इनकी रचना राजा के आश्रय में की थी। जैसे-पृथ्वीराज रासो, बीसलदेव रासो आदि जिस काव्य ग्रंथ मे किसी राजा की कीर्ति, विजय, युद्ध, वीरता आदि का विस्तृत वर्णन हो उसे रासों कहते है।
- **रास**-इसके अन्तर्गत श्रृंगार परक रचनाएं आती है। इसके विकास में जैन धर्म का प्रमुख योगदान है।
- वचनिका-वचनिका राठौड़ रूपसिंह जी आदि प्रमुख वचनिकाएं है।
- **वेलि**- इसमें राजा-महाराजा, सामंतों आदि की वीरता, स्वामिभक्ति, विद्वता, वंशावली आदि का उल्लेख मिलता है। इसकी रचना मुख्यत: डिंगल भाषा में होती है।
- **विगत**-यह इतिहास परक ग्रंथ लेखन शैली है। इसमें राज्य की सामाजिक-आर्थिक इतिहास की जानकारी मिलती है। इसमें किसी विषय का विस्तृत विवरण होता है।
- पवाड़े-लोक कथाओं को पवाड़े कहा जाता है। इसमें वीर, श्रृंगार, हास्य व करूणा आदि भावों का सफल चित्रण होता है।
- **ख्यात**-इन इतिहासपरक रचनाओं को देशी राजाओं ने अपनी मान-मर्यादा का चित्रण करवाने के लिए लिखवाया।
- **वात**-यह कहानी का पर्याय होती है। इसमें बात कहने वाला कहता है और सुनने वाला हुंकारा देता है। यह गद्य, पद्य एवं गद्य एवं पद्य तीनों रूपों में होता है। इनमें ऐतिहासिक अर्द्ध-ऐतिहासिक, पौराणिक व काल्पनिक कथाओ को रोचक ढंग से बताया जाता है।
- **दवावैत**-यह उर्दू-फारसी की शब्दावली युक्त राजस्थानी कलात्मक लेख शैली, जिसमें किसी की प्रशंसा दोहों के रूप में की जाती है।
- **चरचरी**-यह ताल एवं नृत्य के साथ उत्सव में गायी जाने वाली रचना होती है।
- **निसाणी**-इसकी रचना पद्य रूप में किसी व्यक्ति या घटना की स्तुति के लिए की जाती है।
- **मरस्या**-यह किसी व्यक्ति विशेष को मृत्यु के बाद शोक व्यक्त करने के लिए रचित काव्य है, जिसमें उसके चारित्रिक व अन्य गुणों का बखान किया जाता है।
- **विलास**-विलास काव्य कृतियों में राजनीतिक घटनाओं के अलावा आमोद-प्रमोद विषयक पहलुओं का भी वर्णन मिलता है। राजविलास, बुद्धिविलास, वृत्तविलास, भीम विलास आदि महत्वपूर्ण विलास ग्रंथ है।
- **साखी**-साखी का मूल रूप साक्षी है। साक्षी का अर्थ हैं आंखों देखी बात का वर्णन करना अर्थात् गवाही देना। साखी में संत कवियों ने अपने अनुभूत ज्ञान का वर्णन किया है। साखियों में सोरठा छंद का प्रयोग हुआ है। कबीर की साखियां प्रसिद्ध है।
- **सबद**-संत काव्य में सबद से तात्पर्य गये पदों में है। सबद में प्रथम पंक्ति टेक अथवा स्थायी होती है। इसको गाने में बार-बार दोहराया जाता है। सभी संत कवियों से सबदों की रचना की है। सबद हिन्दी के शब्द से बना है।
- **सिलोक**-संस्कृत के श्लोक शब्द का बिगड़ रूप सिलोका है। राजस्थानी भाषा में धार्मिक, ऐतिहासिक और उपदेशात्मक सिलोका लिखे हुए है। राव अमरसिंह रा सिलोका, अजमाल जी रा सिलोका आदि प्रमुख सिलोके है।
- **हकीकत**-हकीकत का अर्थ वास्तविकता से है। इन लघु कृतियों का उद्देश्य किसी घटना, स्थान या राजवंश के बारे में सही जानकारी देना है। बीकानेर री हकीकत, हाड़ा री हकीकत आदि महत्वपूर्ण हकीकत ग्रंथ है।

संस्कृत साहित्य की प्रमुख कृतियां

रचना	रचियता
पृथ्वीराज विजय	जयानक
सुर्जन चरित्र	चन्द्रशेखर
प्रबंध कोष	राजशेखर
भट्टि काव्य	भट्टि
एकलिंग महात्म	महाराणा कुंभा
अमर सार	पं. जीवधर
राजरत्नाकर	भट्ट सदाशिव
वृहत कथा कोष	हरिसेन
हम्मीर महाकाव्य	नयनचन्द्र सूरी
प्रबंध चिंतामणि	मेरूतुंग
राज वल्लभ	मण्डन
राजविनोद	भट्ट सदाशिव
अमर काव्य वंशावली	रणछोड़ भट्ट
अजितोदय	भट्ट जगजीवन
पार्श्वनाथ चरित्र	श्रीधर
कर्मचंद वंशोत्कीर्तन काव्यम	जय सोम
समराइच्छकहा	हरीभद्र सूरी

जैन साहित्य की रचनाएं

रचना	रचियता
कुवलयमाला	उद्योतम सूरि
सुखनिदान	जगन्नाथ
पंचग्रन्थी व्याकरण	बुद्धिसागर सूरि
समुद्रकाव्य	हरिभद्र सूरि
भरतेश्वर बाहुबलि घोर	ब्रजसेन सूरि
नेमिनाथ बारहमासा	पल्हण

राजस्थानी में साहित्य की प्रमुख पुस्तकें

कृति	रचियता	कृति	रचियता
कान्हड़देव प्रबंध	पद्मनाथ	शकुन्तला	करणीदान
डिंग कोश	मुरारीदान	भक्तमाल	नाभादास
पृथ्वीराज रासौ	चंदबरदाई	सागर पांखी	कुंदनमाली
वीर सतसई	नाथूसिंह महियारिया	वैराग्य सागर	नागरीदास
राव जैतसी रो छंद	बिठू सूजो नागरजोत	हां चांद मेरा है।	हरिराम मीणा
अमर काव्य	अमरदान लालस	सुदामाचरित्र	मोहन राज
रतन जसप्रकाश	सागरदान	बरखा बीनणी	रेवतदान चारण
सेनाणी	मेघराज मुकुल	मारवाड़ी व्याकरण	रामकरण आसोपा
सूरज प्रकाश	करणीदान	बादली	चंदसिंह विरकाली
रामरासौ	माधोदास चारण	राजस्थानी कहावतां	मुरली व्यास
चंवरी	मेघराज मुकुल	सगत रासौ	गिरधर आसिया
ढोला मारू रा दूहा	कवि कल्लोल	ढोला मारवाड़ी चडपड़ी	कवि हरराज
कनक सुंदरी	शिवचंद भरतिया	ढोला मारवण री चौपाई	कुशललाभ
खुमाण रासौ	दलपति विजय	मेघदूत	मनोहर प्रभाकर
बीसलदेव रासौ	नरपति नाल्ह	रेंगती है चीटियां	जबरनाथ पुरोहित
विजय पाल रासौ	नल्ल सिंह	हूं गोरी किण पीव री	यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'
दरिन्दे	हमीदुल्ला	बातां री फुलवारी,हिटलर,अलेखू	विजदान देथा
हम्मीर रासौ	शारंगधर (जोधराज)	मैकती काया मुहकती धरती	अन्नाराम सुदामा
बिड़द सिणगार	करणीदान	धरती धोरा री	कन्हैया लाल सेठिया
हम्मीर मद मर्दन	जयसिंह सूरि	पातल और पीथल	कन्हैयालाल सेठिया
गुण भाषा	हेमकवि	एक बीनणी दो बीन	श्रीलाल नथमल जोशी
गुण रूपक	केशवदास	हाला झाला री कुण्डलियां	ईसरदास
राजिया रा सोरठा	कृपाराम	अचलदास खीची री वचनिका	शिवदास गाडण
राजरूपक	कवि वीरभाण	राजस्थानी शब्दकोष	सीताराम लालस
बुद्धि सागर	जान-कवि	टाबरा री बातां	लक्ष्मी कुमारी चूड़ावत
ग्रंथराज	गोपीनाथ	महादेव पार्वती री बेली	किसनो
पगफैरो	मणि मधुकर	डूंगजी जवारजी री बात	लक्ष्मी कुमारी चूड़ावत
रूठी राणी	केसरीसिंह बारहठ	बोलि किसन रूकमणी	पृथ्वीराज राठौड़
अमरफल	डॉ. मनोहर शर्मा	सती रासौ	सूर्यमल्ल मिश्रण
रूकमणी हरण	वीठलदास	वीर सतसई	सूर्य मल्ल मिश्रण (मीसण)
रणमल छंद	श्रीधर व्यास	सती रासौ	सूर्यमल्ल मिश्रण (मीसण)
बृजनिधि ग्रंथावली	प्रतापसिंह	बुद्धि रासौ	जल्ल
चेतावनी रा चूंगटिया	केसरीसिंह बारहठ	केहर प्रकाश	कवि बख्तावर
रंगीलों मारवाड़	भरत व्यास	शत्रु साल रासौ	डूंगरसी
सुधि सपनों के तीर	मणि मधुकर	अक्षर बावनी	माधौदास बारहठ
		राणा रासौ	दयाल (दयाराम)

राजस्थान के मुख्य पर्व/मेले

- **नव सम्व्त्सर (नया वर्ष) :** हिन्दू धर्म में नया वर्ष चैत्र शुक्ल 1 (चेत्र प्रतिपदा) को मनाया जाता है।
- **गणगौर :** (चैत्र शुक्ल तृतीया) मुख्यत: यह त्यौहार 'चैत्र कृष्ण' 1 से चैत्र शुक्ल तृतीया तक कन्याओं व स्त्रियों द्वारा मनाया जाता है किवंदती है यह त्यौहार पार्वती के गौने से अपने पिता के घर वापस लौट आने पर सखियों द्वारा स्वागत गान के रूप में हुआ। राजस्थान में 'बुंदी' में यह त्यौहार नहीं मनाया जाात है क्योंकि बूंदी के शासक बुद्धसिंह का भाई जोधसिंह गणगौर त्यौहार मनाते समय नौका सहित डूब गया था। 'जोधपुर' में भी 1491 ई. से गणगौर की पूजा बन्द कर दी गई क्योंकि जोधपुर शासक 'राव सातल' की मृत्यु इसी दिन तीजणियों को अजमेर के सूबेदार 'मूल्लू खाँ' से बचाने पर घायल होने से हो गई।
- **राव नवमी :** (चैत्र शुक्ला नवमी) दशरथ पुत्र 'भगवान राम' के जन्मदिन के उपलक्ष में मनाया जाता है।
- **अक्षय तृतीया :** (वैशाख शुक्ल तृतीया) भगवान 'परशुराम' के जन्म तथा त्रेता युग के प्रारम्भ होने के कारण मनायी जाती है।
- **निर्जला एकादशी :** (ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी) वर्ष की सभी एकादशी में इसे सर्वश्रेष्ठ माना गया है। पूरे दिन भर इसके व्रत में अन्न व जल ग्रहण नहीं करना श्रेष्ठ माना जाता है।
- **देवशयनी एकादशी :** (आषाढ शुक्ल एकादशी) इसी दिन विष्णु भगवान 'क्षीर-सागर' में शयन करते है शयन की अवधि चार माह तक की होती है। इसलिए इस दिन से चार माह तक कोई भी मांगलिक कार्य नहीं होते है।
- **हरियाली अमावस्या :** (श्रावण अमावस्या)

- **छोटी-तीज/तीज का त्यौहार :** (श्रावण शुक्ल तृतीया) 'तीज पार्वती का प्रतीकात्मक नाम है ऐसा माना जाता है कि इसी दिन 'पार्वती' को कठोर तपस्या के पश्चात् 'शिव' की प्राप्ति हुई। 'जयपुर' में इसी दिन भव्य तीज की सवारी निकाली जाती है।
- **नागपंचमी :** (श्रावण शुक्ल 5) इस दिन सांप की पूजा की जाती है तथा उसे दूध पिलाया जाता है।
- **रक्षा बन्धन :-** (श्रावण पूर्णिमा) प्राचीनकाल में यह दिन विद्यारम्भ का प्रथम दिन माना जाता था। इसे भाई-बहिन का त्यौहार माना जाता है। यह भावनात्मक बन्धन प्रेम की डोरी का होता है।
- **बड़ी तीज/बूढ़ी तीज/कजली तीज :** (भाद्रपद कृष्ण तृतीया) बड़ी या बूढ़ी तीज 'बहुओं' का माना जाता है। गौ माता की पूजा की जाती है। यह मुख्य रूप से उदयपुर, जोधपुर तथा बीकानेर राज्यों के रजवाड़ों में मनायी जाती है। कजली तीज-मुख्यत: बूंदी जिले में मनायी जाती है।
- **कृष्ण जन्माष्टमी :** (भाद्रपद कृष्ण अष्टमी)।
- **गणेश चतुर्थी :** (भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी) गणेश जी के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। कि वन्दती है कि 'चाँद' इस दिन नहीं दिखते हैं क्योंकि कृष्ण पर स्मयन्तक मणि चुराने का झुठा आरोप था।
- **जलझुलनी एकादशी :** (भाद्रपद शुक्ल 11) कृष्ण को इसी दिन घर से बाहर नहाने के लिए निकाला गया। इसलिए इस दिन देव मूर्तियों को तालाब या नदियों पर गाजे-बाजे के साथ स्नांन के लिये ले जाया जाता है।
- **श्राद्ध पक्ष :** (भाद्रपद पूर्णिमा से अश्विन अमावस्या तक) 15 दिनों में 'पितृ पक्ष' को श्रृद्धांजलि प्रदान की जाती है तथा दान-पूण्य दिया जाता है।
- **नवरात्री :** (अश्विन शुक्ल 1 से अश्विन शुक्ल नवम् तक) दूसरी बार चैत्र माह में।
- **विजयादशमी/दशहरा :** (आश्विन शुक्ल 10) इस दिन भगवान राम ने रावण पर विजय प्राप्त की और रावण को मारा।
- **शरद पूर्णिमा :** (आश्विन पूर्णिमा)
- **करवा चौथ :** (कार्तिक कृष्ण चतुर्थी) महिलाओं द्वारा अपने पति की दीर्घायु की आराधना के लिए वृत करती है। दिन भर व्रत के पश्चात रात्रि में चाँद देख कर तथा करवे की पूजा करके पति का चेहरा देख कर व्रत खोलती है।
- **धन तेरस :** (कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी) भगवना धनवंतरी का जन्म दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- **दीपावली :** (कार्तिक अमावस्या) हिन्दू राम के अयोध्या लौटने की खुशी में मनाते है।
- **देवउठनी एकादशी / देवोत्थान एकादशी / देवउठनी ग्यारस:** (कार्तिक शुक्ल एकादशी) क्षीर-सागर से भगवान विष्णु सोऐ हुए इसी दिन जागते है। विष्णु भगवान से तुलसी के पौधे का विवाह किया जाता है। नये ईख (गन्ना) को पूजाकर चूसा जाता है। इस दिन से पुन: मांगलिक कार्य प्रारम्भ हो जाते है।
- **बसन्त पंचमी :** (माघ शुक्ल पंचमी) भगवान विष्णु तथा मां सरस्वती की पूजा अर्चना की जाती है।
- **महाशिवरात्री :** (फाल्गुन कृष्ण 14)
- **होली :** (फाल्गुन पूर्णिमा) सत्य की जीत के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। हिरण्यकश्यप की बहिन होलिका द्वारा प्रहलाद को गोद में बिठाकर अग्नि में जलाना चाहा परन्तु भगवान के आर्शीवाद से होलिका का दहन हो गया और प्रहलाद सुरक्षित बच गया।
- **शीतलाष्टमी :** (चैत्र कृष्ण अष्टमी)
- **मकर संक्रांति :** (14 जनवरी) सूर्य के उतरायण होने के कारण मनायी जाती है।
- **भोमवती अमावस्या :** (पोष कृष्णा अमावस्या) इस दिन पीपल वृक्ष की पूजा करके 108 बार प्रदक्षिणा की जाती है।
- **आवंला एकादशी :** (फाल्गुन शुक्ल 11) आवंले के वृक्ष के पास भगवान की पूजा की जाती है।
- **तुलसी एकादशी :** (कार्तिक कृष्ण एकादशी) इस दिन स्त्रियां तुलसी की पूजा करती है। तुलसी को भगवान विष्णु की पत्नी कहा गया है।
- **रामदेव दूज :** (भाद्रपद शुक्ल द्वितीया)
- **गोगा नवमी :** (भाद्रपद कृष्ण नवमी)
- **तेजा दशमी :** (भाद्रपद शुक्ल दशमी)
- **देव सप्तमी :** (भाद्रपद शुक्ल सप्तमी) देव नारायण जी का मेला।
- **न्हाण:** यह कोटा जिले के सांगोद क्षेत्र की प्रसिद्ध सवारी है। लगभग 9वीं शताब्दी से प्रचलन माना जाता । इसमें सभी ग्राम वासी भाग लेते हैं। इसमें न रंग न गुलाल तथा न ही पानी का प्रयोग होता है। होली के उपरान्त शाही लवाज में बादशाह की सवारी निकाली जाती है जिसमें लोग विचित्र वेश भूषा से सज्जित होते हैं। वीर वर सांगा गुर्जर की पूण्य स्मृति से 'न्हाण' मनाया जाता है।

मुस्लिम त्यौहार

- **मुहर्रम :**हजरत मोहम्मद के नाती हुसैन इमाम के बलिदान की यादगार में यह त्यौहार मनाया जाता है। इमाम हुसैन की याद ताजिए बनाकर निकाले जाते है। जिसमें काल्पनिक युद्ध का प्रदर्शन भी करते है। यह शोक के रूप में मानाया जाता है।
- **बारहवQात:**इसे ईद मिलान भी कहा जाता है। यह त्यौहार रबी उल्ल अव्वल की बारहवीं तारीख को मनाया जाता है। इस दिन खीर व चावल बनाकर गरीबों में बाइसे ईद मिलान भी कहा जाता है। यह त्यौहार रबी उल्ल अव्वल की बारहवीं तारीख को मनाया जाता है। यह त्यौहार मोहम्मद साहब के जन्म की स्मृति में मनाया जाता है। इस दिन खीर व चावल बनाकर गरीबों में बांटा जाता है।
- **शब-ए-बरात :** यह त्यौहार मोहम्मद साहब की मुक्ति के रूप में शाबान माह की चौदहवीं तारीख को मनाया जाता है। इस दिन यह माना जाता है कि सभी मनुष्य के कर्म की जांच होती है और कर्मो के अनुसार उनके भाग्य का निर्धारण होता है। अत: मुसलमान इस रात को अपने किये पापों के लिए खुदा से माफी मांगते है तथा मृत सम्बंधियों का स्मरण करते है।
- **ईदुलQितर :** इसे रमजान की ईद भी कहते है। रमजान मास में मुसलमान रोजा रखते है रमजान माह की समाप्ति पर शव्वाल मास की पहली तारीख को ईदुलफितर मनाया जाता है। यह माना जाता है कि इस माह मे कुरान स्वर्ग से प्रकट हुई थी।
- **ईदलजुहा :** इसे बकरा ईद भी कहा जाता है। ईदलजुहा का अर्थ कुर्बानी होता है। यह मान्यता है कि अरबों के धार्मिक गुरू ईब्राहिम को स्वप्न आया कि वह अपनी सबसे प्रिय वस्तु को ईश्वर को बलिदान कर दे। अत: उन्होने अपने पुत्र स्माईल को बलिदान कर दिया लेकिन चादर हटाई गई तो एक कटी हुई भेड़ मिली। उसी के प्रतीक रूप में बकरे या भेंड की कुर्बानी दी जाती है। यह जिल्हिज की दसवीं तारीख को मनाया जाता है।

ईसाईयों के त्यौहार

- **नववर्ष :** ई. सन् की पहली जनवरी को यह दिवस मनाया जाता है।
- **ईस्टर :** ईसाईयों की धारणा है कि 2 मार्च और 22 अप्रैल के बीच में पूर्णिमा के बाद के रविवार के दिन ईसामसीह पुर्नजीवित हुऐ थे। उसी दिन की याद में ईसाई यह त्यौहार मनाते है। जिसमें गिरजाघरों में प्रार्थना करते है।
- **गुड फ्राइडे :** ईस्टर के रविवार के ठीक पहले पड़ने वाले शुक्रवार को यह त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन ईसामसीह की फांसी दी गई थी।
- **क्रिसमिस डे :** यह त्यौहार ईसामसीह के जन्म दिन के रूप में 25 दिसम्बर को मनाया जाता है। ईसामसीह का जन्म 25 दिसम्बर 4 ईसा पूर्व को हुआ था।

सिन्धी समाज के पर्व

- **थदड़ी या बड़ी सातम :** यह त्यौहार भाद्रपद कृष्ण सप्तमी को मनाया जाता है। इस दिन बासोड़ा के रूप में मनाते है और पूरा दिन गर्म खाना नहीं खाते है। महिलाओं द्वारा पीपल के वृक्ष पर चांदी की मूर्ति रखकर पूजा की जाती है।
- **चालीहा महोत्सव :** सिंध प्रान्त के बादशाह मृखशाह के जुल्मों से परेशान होकर सिन्धी समाज के लोगों ने चालीस दिन तक व्रत किया तथा चालीसवे दिन झुलेलाल का अवतार हुआ इसी याद मे प्रतिवर्ष सूर्य के कर्क राशि में आ जाने पर 16 जुलाई से 24 अगस्त तक यह चालीसा महोत्सव मनाया जाता है।
- **चेटीचंड :** सिंध के थट्टा नगर में झुलेलाल जी सम्वत् 1017 की चैत्र माह की शुक्ल द्वितीया को जन्म हुआ। जिन्होने अत्याचारी राजा मृखशाह के जुल्मों से लोगों को मुक्ति दिलाई थी। इस दिन झुलेलाल की सवारी निकाली जाती है। जो पल्ला कहलाती है।

जैन धर्म के पर्व

- **पर्युषण :** यह जैनियों का महापर्व कहलाता है। यह सात्विक पर्व है जिसका अर्थ निकट बसना होता है।
- **महावीर जयन्ती :** जैन धर्म के चौबीसे तीर्थकर भगवान महावीर का जन्म दिन चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को महावीर जयन्ती के रूप में मनाते है।
- **सुगन्ध दशमी पर्व :** भाद्रपद शुक्ल दशमी को यह पर्व मनाया जाता है।
- **रोट तीज :** भाद्रपद शुक्ल तृतीया को मनाया जाता है।

सिख धर्म के पर्व

- **गुरू गोविन्द सिंह जयन्ती :** सिख समुदाय के दसवें अन्तिम गुरू गोविन्द सिंह ने गुरू ग्रन्थ साहिब को गुरू घोषित किया था तथा उत्तराधिकारी गुरू परम्परा समाप्त कर दी थी। इनके जन्म दिवस पौष शुक्ल सप्तमी को इनकी जयन्ती के रूप में मनाया जाता है।
- **लोहड़ी :** यह त्यौहार मकर संक्रांति से एक दिन पूर्व मनाया जाता है। रात्रि को लोहड़ी जलाकर उसके चारों तरफ नाचते गाने है खुशियाँ मनाई जाती है।
- **वैशाखी :** यह त्यौहार सामान्यत: 13 अप्रैल को मनाया जाता है। 13 अप्रैल, 1699 ई. को 10वें गुरू गोविन्द सिंह ने आनन्दपुर साहिब, रोपड़ (पंजाब) में सिखों के खालसा पथ की स्थापना की। इसी उपलक्ष्य में यह त्यौहार मनाया जाता है। जिसमें लंगर के माध्यम से नि: शुक्ल सामुहिक भोज का आयोजन किया जाता है।
- **गुरू नानक जयन्ती :** सिख धर्म में प्रवर्तक गुरू नानक देव का जन्म दिवस कार्तिक पूर्णिमा को गुरुनानक जयन्ती के रूप में मनाया जाता है।

राजस्थान के प्रमुख मेले

मेला	स्थान	तिथि
फुलडोल मेला	रामद्वारा (शाहपुरा,भीलवाड़ा)	चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से पंचमी तक
धानोप माता का मेला	धनोप गांव (भीलवाड़ा)	चैत्र कृष्ण एकम् से दशमी तक
शीतला माता मेला	शील डूंगरी (चाकसू, जयपुर)	चैत्र कृष्ण अष्टमी
ऋषभदेव मेला	ऋषभदेव (धुलेव,उदयपुर)	चैत्र कृष्ण अष्टमी-नवमी
जौहार मेला	चित्तौड़गढ़ दुर्ग (चित्तौड़गढ़)	चैत्र कृष्णा एकादशी
मल्लीनाथ पशु मेला	तिलवाड़ा (बाड़मेर)	चैत्र कृष्णा 11 से चैत्र शुक्ला 11 तक
घोटिया अम्बा मेला	घोटिया (बारीगामा, बांसवाड़ा)	चैत्र अमावस्या
विक्रमादित्य मेला	उदयपुर	चैत्र अमावस्या
कैलादेवी मेला	कैलादेवी (करौली)	चैत्र शुक्ला एकम् से दशमी तक
गणगौर	जयपुर व उदयपुर	चैत्र शुक्ला तीज
राम रावण मेला	बड़ीसादड़ी (चित्तौड़गढ़)	चैत्र शुक्ला दशमी
श्री महावीरजी मेला	महावीरजी (करोली)	चैत्र शुक्ला 13 से वैशाख कृष्णा 2 तक
मेहंदीपुर बालाजी मेला	मेंहदीपुर बालाजी	चैत्र पूर्णिमा (हनुमान जयंती)
सालासर बालाजी मेला	सालासर (सुजानगढ़, चुरू)	चैत्र पूर्णिमा (हनुमान जयंती)
धींगागवर बेंतमार मेला	जोधपुर	वैशाख कृष्णा तृतीया
गेर मेला	सियावा (आबूरोड़, सिरोही)	वैशाख शुक्ला चतुर्थी
नारायणी माता मेला	सरिस्का (जयपुर)	वैशाख शुक्ला एकादशी
बाणगंगा मेला	विराटनगर (जयपुर)	वैशाख पूर्णिमा
गोमती सागर मेला	झालरापाटन (झालावाड़)	वैशाख पूर्णिमा
मातृकुण्डिया मेला	मातृकण्डिया (चित्तौड़गढ़)	वैशाख पूर्णिमा
गौतमेश्वर मेला	गौतमेश्वर (अरनोद, प्रतापगढ़)	वैशाख पूर्णिमा
सीता माता मेला	सीतामाता (प्रतापगढ़)	ज्येष्ठ अमावस्या
सीताबाड़ी का मेला	सीताबाड़ी (केलवाड़ा, बाँरा)	ज्येष्ठ अमावस्या

गोगा दशहरा मेला	कामां, भरतपुर	ज्येष्ठ सुदी सप्तमी से बारस तक
कल्पवृक्ष मेला	मांगलियावास, अजमेर	हरियाली अमावस्या
गुरूद्वारा बुड्ढा जोहड़ मेला	गंगानगर	श्रावण अमावस्या
चारभुजानाथ मेला	मेड़ता सिटी (नागौर)	श्रावण शुक्ला एकादशी से सात दिन तक
वीरपुरी मेला	मंडोर (जोधपुर)	श्रावण शुक्ला अन्तिम सोमवार
कजली मेला	बूंदी	भाद्रपद कृष्णा तृतीया
जन्माष्टमी	नाथद्वारा (राजसमंद)	भाद्रपद कृष्णा अष्टमी
गोगानवमी	गोगामेड़ी (हनुमानगढ़)	भाद्रपद कृष्णा नवमी
राणी सती का मेला	झुंझुनू	भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी
रामदेव का मेला	रामदेवर (रूणेचा)	भाद्रपद अमावस्या
गणेशजी का मेला	रणथम्भौर (सवाई माधोपुर)	भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी
चुंघी तीर्थ मेला	चुंघी तीर्थ (जैसलमेर)	भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी व पंचमी
हनुमानजी का मेला	पांडुपोल (अलवर)	भाद्रपद शुक्ला पंचमी
नागपंचमी मेला	मंडोर (जोधपुर)	भाद्रपद शुक्ला पंचमी
भोजन थाली मेला	कामां (भरतपुर)	भाद्रपद शुक्ला पंचमी
तीर्थराज मेला	मचकुण्ड (धौलपुर)	भाद्रपद शुक्ला षष्टमी
सवाई भोज मेला	सवाई भोज (आसींद, भीलवाड़ा)	भाद्रपद शुक्ला अष्टमी
भर्तृहरि मेला	भर्तृहरि (अलवर)	भाद्रपद शुक्ला अष्टमी
खेजड़ली शहीदी मेला	खेजड़ली (जोधपुर)	भाद्रपद शुक्ला दशमी
देवझूलनी मेला	चारभुजा (राजसमंद)	भाद्रपद शुक्ला एकादशमी
सांवलिया जी का मेला	मण्डफिया (चित्तौड़गढ़)	भाद्रपद शुक्ला एकादाशी
दशहरा मेला	कोटा	आश्विन शुक्ला दशमी
मीरा महोत्सव	चित्तौड़गढ़	आश्विन पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा)
अन्नकूट मेला	नाथद्वारा (राजसमंद)	कार्तिक शुकला एकम्
गरूड़ मेला	वंशी पहाड़पुर (भरतपुर)	कार्तिक शुक्ला तृतीया
पुष्कर मेला	पुष्कर (अजमेर)	कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा
चंद्रभागा मेला	झालरापाटन (झालावाड़)	कार्तिक पूर्णिमा
कपिल मुनि का मेला	कोलायत (बीकानेर)	कार्तिक पूर्णिमा
बजरंग पशु मेला	सिणधरी (बाड़मेर)	मार्गशीर्ष कृष्णा तृतीया
मानगढ़ धाम मेला	मानगढ़ धाम (बांसवाड़ा)	मार्गशीर्ष पूर्णिमा
नाकोड़ा जी का मेला	नाकोड़ा तीर्थ (मेवानगर,बाड़मेर)	पौष कृष्णा दशमी
श्री चौथ माता का मेला	चौथ का बरवाड़ा (सवाई,माधोपुर)	माघ कृष्णा चतुर्थी
बृज यात्रा मेला	डीग (भरतपुर)	माघ कृष्णा 12 से माघ सुदी पंचमी तक
बसन्ती पशु मेला	रूपवास (भरतपुर)	माघ अमावस्या के माघ सुदी अष्टमी
पर्यटन मरू मेला	जैसलमेर व सम (जैसलमेर)	माघ शुक्ला 13 से 15 तक
बेणेश्वर	वेणेश्वर, साबला (डूंगरपुर)	माघ पूर्णिमा
शिवरात्री मेला	शिवाड़ (सवाई, माधोपुर)	फाल्गुन कृष्णा 13
एकलिंगजी मेला	कैलाशपुरी (उदयपुर)	फाल्गुन कृष्णा 13
सौरत (त्रिवेणी) मेला	त्रिवेणी संगम, मेनाल	फाल्गुन कृष्णा 13
रणकपुर मेला	रणकपुर (पाली)	फाल्गुन कृष्णा 4 व 5
चनर्णी चेरी मेला	देशनोक (बीकानेर)	फाल्नगुन कृष्णा सप्तमी
खाटूश्याम जी मेला	खाटूश्या मजी (सीकर)	फाल्गुन कृष्णा एकादशी
तिलस्वाँ महादेव मेला	तिलस्वाँ(मांडलगढ़, भीलवाड़ा)	फाल्गुन पूर्णिमा
डाडा पम्पाराम का मेला	पम्पाराम का डेरा विजयनगर (गंगानगर)	फाल्गुन माह
वीरातरा माता का मेला	वीरातरा, बाड़मेर	चैत्र भाद्रपद व माघ शुक्ला चौदस
करणी माता का मेला	देशनोक बीकानेर	नवरात्रा (चैत्र व आश्विन)
शाकम्भरी माता का मेला	शाकम्भरी सांभर	नवरात्रा (चैत्र व आश्विन)
दधिमति माता का मेला	गोठ मांगलोद (नागौर)	शुक्ला 8 (चैत्र व आश्विन)
मनसा माता का मेला	झुंझुनू	चैत्र शुक्ला अष्टमी व आश्विन शुक्ला अष्टमी
बीजासन माता का मेला	इन्द्रगढ़, बूंदी	चैत्र व आश्विन नवरात्रा तथा वैशाख पूर्णिमा
लोहार्गल मेला	लोहार्गल, झूंझूनु	भाद्रपद कृष्णा नवमी से अमावस तथा चैत्र में सोमवती अमावस्या
मरकण्डेश्वर मेला	अंजारी गांव, सिरोही	भाद्रपद शुक्ला ग्यारस एवं वैशाख पूर्णिमा
चंद्रप्रभु मेला	तिजारा, अलवर	फाल्गुन शुक्ला सप्तमी व श्रावण शुक्ला दशमी
सैपऊ महादेव	सैपऊ, धौलपुर	फाल्गुन व श्रावण मास की चतुर्दशी को

राजस्थान के लोक नाट्य

ख्याल

- ख्याल का शाब्दिक अर्थ-खेल। यह लोक नाट्य की विधा है। किसी धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक या पौराणिक आख्यान को पधबद्व रचनाओं के रूप में अलग-अलग पात्रों द्वारा गा-गाकर लोक मंनोरजन हेतु लोक नाट्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
- संगीत प्रधान लोकनाट्य।
- भाग लेने वाले कलाकारों को खिलाड़ी कहते है।
- दल के मुखिया को उस्ताद कहते है।
- ख्याल प्रतियोगिता को दंगल कहते है।
- नगाडा तथा हारमोनियम प्रमुख वाद्ययंत्र।

प्रमुख ख्याल

कुचामनी ख्याल :-
- प्रवर्तक-लच्छीराम, हास्य एवं विनोद प्रधान ख्याल। कुचामन सिटी व आसपास में लोकप्रिय। वर्तमान प्रमुख कलाकार उगमराज तथा वंशीलाल चुई। ओपेरा शैली पर आधारित ख्याल।
- लच्छीराम ने गोगा चौहान, मीरामंगल, राव रिडमल आदि ख्यालों की रचना की।

जयपुरी ख्याल :-
- स्त्री पात्रों की भूमिकाएं स्त्रियां ही निभाती। गुणी जन खाने के कलाकर भाग लेते है। प्रचलन जयपुर एवं आस-पास के कस्बों में।

शेखावटी/चिड़ावा ख्याल :-
- प्रवर्तक-नानूराम/नानूलाल राणा (चिड़ावा) दुलिया राणा ने इसे लोक प्रियता दी (नानूजी के शिष्य)। चिड़ावा, चूरू व शेखावटी क्षेत्र में लोकप्रिय।
- नानूराम ने राजा हरिश्चन्द्र, हीर-रांझा,भतृहरी, जयदेव कलाली, ढोला मारवणी ख्यालों की रचना की।

तुर्रा-कलंगी ख्याल :-
- प्रवर्तक-हिन्दू संत तुकनगरी, मुस्लिम संत शाहअली-चन्देरी (एम.पी.)
- तुकनगीर शिव के उपासक, शाह अली शक्ति उपासक। तुकनगीर भगवा वस्त्र धारण। शाह अली हरे वस्त्र। दोनों ने मेवाड़ आकर विघा प्रचलित की।
- दोनों के बीच शास्त्रार्थ के काव्य दंगल। चन्देरी के राजा ने तुकनगीर को अपने मुकुट का तुर्रा एवं शाहअली को कंलगी भेंट की।
- तुर्रा शिव का, कंलगी पार्वती का (प्रतीक)। राजस्थान के चित्तोड़, घोंसुण्डा, निम्बाहेड़ा में सहेडूसिंह (तुर्रा) तथा हमीद (कंलगी) के नेतृत्व में प्रारम्भ।
- तुर्रा-कलंगी ख्यालों के दंगल में दोनों पक्षों में बैठकर प्रतिस्पर्धा मूलक संवाद होते, जिसे बैठक (गम्मत) का गाना कहते। मंच सज्जा का प्रचलन (अन्य लोक नाट्यों में नहीं)। प्रमुख
- वाघ-चंग। गैर व्यावसायिक लोक नाट्य। संवाद को बोल कहते है।
- तुर्रा-कलंगी की शैली को माच का ख्याल कहते है। स्त्री पात्रों की भूमिका पुरूषों द्वारा।
- जयदयाल सर्वाधिक लोकप्रिय कलाकर। अन्य कलाकर चेतराम औंकारसिंह।

अली बक्शी ख्याल :-
- प्रवर्तक-राव अलीबक्श (मुण्डावा, अलवर) अलवर में सर्वाधिक लोकप्रिय। इस ख्याल का अलाप अपनी विशिष्ट पहचान। अलीबक्श को अलवर का रसखान कहते।

हेला ख्याल :-
- प्रारम्भ में इसके कलाकार/शायर हेला जाति के। प्रारम्भ बम वादन से फिर सुमरनी, चढ़ाव व टेर द्वारा हेला।
- सवाई माधोपुर व लालसोट (दौसा) के क्षेत्रों में प्रचलन। नोबत वाघ का प्रयोग।

कन्हैया ख्याल :-
- हेला ख्याल से मिलती-जुलती संगीत विद्या।
- इस ख्याल की प्रमुख विशेषता पंक्ति की समाप्ति पर उल्टी मीट हैं तथा इसके प्रस्तुतीकरण में मेड़िया का प्रमुख योगदान।
- करौली, सवाई माधोपुर, भरतपुर व धौलपुर में प्रचलन। मूलरूप से मीणा जाति द्वारा।
- कन्हैया लोक गीत के प्रस्तुतीकरण करने वाले को 'मेड़िया' । दिन में आयोजित (मई-जून माह में)। गुजर, मीणा, माली जाति के लोग भाग लेते है। नोबत, घेरा, मंजीरा, ढोंलक वाघ यंत्र।

किशनगढी ख्याल :-
- अजमेर लोकप्रिय।
- प्रमुख कलाकार-बंशीधर।

ढप्पाली ख्याल :-
- अलवर में लोकप्रिय ।
- श्री मोतीलाल (बीकानेर), प्रसिद्ध ख्याल लेखक, इन्होंने गोपीचन्द व अमरसिंह राठौड़ पर ख्याल लिखे।
- अलवर भरतपुर, लक्ष्मणगढ़ का क्षेत्र ढप्पाली ख्याल के लिए प्रसिद्ध।
- ढोंल, नगाड़ा, शहनाई वाद्य यंत्र।

तमाशा

- संगीत प्रधान लोक नाट्य।
- जयपुर की परम्परागत लोक नाट्य शैली।
- महाराष्ट्र की लोक नाट्य शैली तमाशा से प्रभावित।
- प्रारम्भ महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल में।
- जयपुर महाराजा प्रतापसिंह ने तमाशा के प्रमुख कलाकार (बंशीधर भट्ट महाराष्ट्र निवासी) को अपने गुणीजन खानें में शामिल कर इसे प्रारम्भ किया।
- भट्ट परिवार मुख्यत: बुलन्दशहर (यूपी) के रहने वाले। उस्ताद परम्परा फुल जी भट्ट ने प्रारम्भ की।
- रामसिंह II ने तमाशा के कलाकारों को आश्रय प्रदान किया
- प्रमुख वाद्य-सांरगी, तबला, नक्कारा, हारमोनियम।
- तमाशे के संवाद काव्यमय् इनमें संगीत, नृत्य और गायन तीनों की प्रधानता
- अखाड़ा-जहां खुले मंच पर तमाशा हो।
- कलाकार-गोपीजी भट्ट, मन्नूजी भट्ट, फूलजी भट्ट वासूदेव। भट्ट स्त्री पात्रो की भूमिका स्त्रियों द्वारा ।
- नर्तकी गौहर जान (जयपुर) स्त्री पात्र का अभिनय करने वाली।
- वंशीधर भट्ट (दानी शिरोमणी) द्वारा रचित तमाशे-पठान, जोगी-जोगन, कान-गूजरी, लैला-मजनू, रसीली-तम्बोलन, छैला-पनिहारिन, हीरा-रांझा, छूट्न-मियां
- जयपुर क्षेत्र में निम्न अवसर पर अलग-अलग प्रकार के तमाशे किये जाते है :-
  - शीतलाष्टमी - जुठ्ठनमियाँ
  - होली - जोगी-जोगन
  - होली के दूसरे दिन - हीर-राँझा
  - चैत्र अमावस्या - गोपीचन्द

रम्मत

- उद्भव-जैसलमेर से।
- ऐतिहासिक एवं पौराणिक आख्यानों के आधार पर अभिनीत काव्य रचनाओं को
- बीकानेर व जैसलमेर क्षेत्र के ख्याल को रम्मत कहते है। बीकानेर में सर्वाधिक लोकप्रिय।
- संगीत नाट्य तेजकवि द्वारा रचित रम्मतें-स्वतंत्रता बावनी, मूमल, जोगी भर्तृहरि, छेले तम्बोलन।
- रम्मतों का प्रारम्भ फकड़ बाबा की रम्मत व रामदेवजी के भजन से।
- बीकानेर में आचार्यो का चौक रम्मतों के लिए सर्वाधिक प्रसिद्ध।
- आयोजन-फाल्गुन शुक्ला अष्टमी से चतुर्दशी तक।
- हेड़ाऊ मेरी की रम्मत का सूत्रपात स्व. जवाहरलाल जी पुरोहित ने जो की आदर्श पति-पत्नी पर आधारित सर्वाधिक लोकप्रिय।
- खिलाड़ी मुख्यतः पुष्करणा ब्राह्मण।
- आयोजन रात्रि 11-12 बजे से सुबह तक।
- खेलार-रम्मत लोक नाट्य को अभिनीत करने वाले कलाकार, रमतिये/रामतिये खेल प्रदशित करने वाले को कहते है।
- विषय-ऐतिहासिक, सामाजिक,प्रेमाख्यान।
- वाद्य-नगाडा, ढोलक।
- बीकानेर में मंचन पाटो पर। पाटा-संस्कृति बीकानेर की देन है।
- गैर-पेशेवर सामुदायिक लोक नाट्य
- कलाकार-मनीराम व्यास, तुलसीराम, फागू महाराज, सूआ महाराज (बीकानेर)
- परमानंद, गिरधारी सेवक, तेजकवि (जैसलमेर)
- सकतमल, तुलसीदास, जीतमल (जैसलमेर)
- स्त्री पात्रों की भूमिका पुरूषों द्वारा की जाती है।

नौटंकी

- भरतपुर जिले का प्रमुख लोक नाट्य। भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर क्षेत्रों में प्रचलन।
- उत्तरप्रदेश की हाथरसी नौटंकी से प्रभावित।
- प्रवर्तक- श्री भूरीलाल (डीग, भरतपुर)
- प्रमुख खिलाड़ी -गिरिराज प्रसाद (कामां, भरतपुर)
- नौ प्रकार के वाद्यों का प्रयोग किया जाता है।
- मुख्य-नक्कारा, अन्य-नगाड़े, ढोलक, सारंगी, चिंकारा, ढपली, शहनाई, हारमोनियमं, मंजीरा।
- वर्तमान में महिला खिलाड़ी भाग लेती है ।
- भरतपुर-धौलपुर क्षेत्र में नत्थाराम की मण्डली नौटंकी हेतु प्रसिद्ध।
- यह एक पुरानी ख्याल शैली। ग्रामीण क्षेत्रों में लोकप्रिय।
- प्रसिद्ध खेल-नकाब पोश, रूप, राजा भृर्तहरि, सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र।
- मुश्तर बाई (हिण्डोन सिटी, करौली) राज्य की पहली महिला नौटंकी कलाकार।

गवरी या राई

- धार्मिक आस्थाओं, सामाजिक परम्पराओं एवं संस्कृति गतिविधियों का गहन अंकन व चित्रण।
- रक्षाबंधन के दूसरे दिन से सवा महिने तक ।
- भीलों का प्रसिद्ध लोकनाट्य।
- सबसे प्राचीन लोकनाट्य।
- लोकनाट्यों का मेरू नाट्य।
- उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा में प्रचलन।
- मुख्य आधार शिव तथा भस्मासुर की कथा को माना जाता है।

गवरी के पात्र :-

- राई बुढियां -शिव -भस्मासुर का प्रतीक
- राईयाँ-दोनों पार्वतियों की प्रतिमूर्ति (मोहनी तथा असली)
- खुड़कुटियां -झामट्यां द्वारा बोली कविता को दोहराता है।
- झामट्या-लोक भाषा में कविता बोलता है।
- पाटभोपा-भोपे के वेश धारण करने वाला।
- खेल्य-अन्य सभी पात्रों को।

- धाड़ावत, वलावण गवरी के दो अंतिम पर्व खेल्ये-अन्य सभी पात्र को कहते है।
- कुटकुड़ियां-नाट्य का सूत्रधार।
- भीलों के अलावा इस लोक नाट्य को कोई नहीं खेल सकता।
- मुख्य प्रसंग व लघुनाटिकाएं-बनजारा-बनजारी, बादशाह की सवारी, हठिया अम्बाव, लाखा बणजारा, माता और शेर, भियांवड़, शेर-सुअर की लड़ाई, खाड़लिया भूत, कानगूजरी, गोमा-मीणा, कालूकरी।
- वाद्य-मांदल और थाली
- स्त्रियों की भूमिका पुरूषों द्वारा।
- विशुद्ध धार्मिक लोकनाट्य।
- गौरी (पार्वती) भीलों की प्रमुख आराध्य देवी।
- गवरी की धाई-गवरी के विभिन्न प्रसंगों को मूल कथानक से जोड़ने हेतु बीच-बीच में किया जाना वाला सामुहिक नृत्यं।

स्वांग

- किसी के रूप को अपने मै आरोपित कर उसे प्रस्तुत करना ही स्वांग है।
- स्वांग कला भरतपुर क्षेत्र की पुरानी मनोरंजक विद्या।
- बहरूपियां-स्वांग करने वाले को कहते है। रावल, भांड, मानमति जाति द्वारा स्वांग प्रस्तुत किया जाता है।
- चैत्र कृष्णा त्रयोदशी को भीलवाड़ा जिले के मांडल में नाहरों का स्वांग बहुत प्रसिद्ध।
- मारवाड़ जाति में रावल जाति के लोगों द्वारा स्वांग।
- धनरूप भांड प्रसिद्ध खिलाड़ी, महाराजा मानसिंह ने जागीर प्रदान की।
- जानकीलाल भांड के प्रयासों द्वारा बहरूपियां कला राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात हुई (भीलवाड़ा-निवासी)।

राजस्थान में प्रचलित स्वांग नाट्य :-

- **बहुरूपियां स्वांग**-पात्र लोक चरित्र के अनुसार अपना रूप बनाता।
- **नाहर**-भीलवाड़ा में चैत्र कृष्णा त्रयोदशी को (1614ई. शाहजहां के समय प्रचलित)।
- सवारी व जुलुस नाट्य में कोटा का न्हाण।
- **चौकच्यानणी**-शेखावटी में गणेश चतुर्थी की रात्रि में बच्चों द्वारा किया जाने वाला स्वांग।

- देवगढ़ (राजसमंद) के भांड प्रसिद्ध।
- गीदड़ के स्वांग शेखावटी के प्रसिद्ध ।
- लन्दन में जानकीलाल भाण्ड ने बन्दर का रूप धारण करके मंकी मैन के रूप में ख्याति अर्जित की।
- वर्तमान कलाकार -लादूलाल भाण्ड (जानकी भाण्ड के पुत्र)

भवाई नाट्य

- व्यावसायिक श्रेणी का लोकनाट्य माना जाता है।
- जन्म दाता-बाघजी।
- मुख्यतः गुजरात का लोक नाट्य।
- राजस्थान के गुजरात के सीमावर्ती इलाकों में भी यह नृत्य नाटिका बहुत लोकप्रिय।
- संगीत की बजाय नृत्य अभिनय व कलाकारी पर अधिक जोर।
- सामाजिक समस्यायों पर मुख्यतः केन्द्रित।
- भवाई जाति के लोग खिलाड़ी।

प्रमुख भवाई लोक नाट्य

- **जस्मा-ओडन**-शांता गांधी द्वारा लिखा गया नाट्य।
- बीकाजी और बाघजी
- ढोला मारू
- सगोजी-सगीजी
- **वाद्य**-सारंगी, नफरी, नगाडा मंजीरा।

गंधर्व नाट्य

- मूलतः मारवाड़ क्षेत्र का लोक नाट्य।
- गंधर्व पेशेवर नृत्यकार है इनके द्वारा संगीत नाट्य अजना सुन्दरी और मैना सुन्दरी का प्रदर्शन किया जाता है।
- गंधर्व नाट्य कलाकार सभ्य शिक्षित और शिष्ट होते है तथा अपने जीवन के मिशन के रूप में इन्हें करते है।
- जैन धर्म पर आधारित लोकनाट्य।

लीलाएँ

- लोक नाट्य का बहुप्रचलित रूप। इसमें अवतारों के चरित्र का अभिनव उन्हें रिझाने एवं उनका गुणगान करने हेतु नृत्य, गायिकी एंव संवादो के रूप में।
- रामलीला व रासलीला के खेल विशेष रूप से मेवाड़, भरतपुर और जयपुर क्षेत्रों में बड़े लोकप्रिय

रासलीला

- कृष्ण के जीवन-चरित्र पर आधारित। शिवलाल कुमावत प्रमुख खिलाड़ी।
- फुलेरा (जयपुर) प्रमुख केन्द्र।
- जनुथर की रासलीला (भरतपुर)

रामलीला

- कृष्ण के चरित्र पर आधारित। जुरहरा (भरतपुर) की रामलीला सवारी नाट्य पर आधारित।
- बिसाऊ (झुंझुनू) पाटूदा (कोटा) तथा जुरहरा (भरतपुर) की रामलीलाएं प्रसिद्ध।
- अटरू (बारां) की रामलीला में धनुष राम न तोड़ कर दर्शक तोड़ते है।
- 2 1/2 कड़ी के दोहो की रामलीला मांगरोल (बारां) की प्रसिद्ध।

सनकादियों की लीलाएँ

- धोसुण्डा एंव बस्सी (चित्तौड़) के प्रमुख केन्द्र।
- नृसिहावतार, ब्रह्म, गोरा-काला आदि लीलाएँ ।

गौर लीला :-

- आबु क्षेत्र के गरासिया गणसौर पर करते।

दंगली नाट्य

- नाट्य में भी दो दल होते है लेकिन दल में लोगों की संख्या सैकड़ो में होती है औरे वह आमने सामने खड़े हो जाते है। इस प्रकार के लोक नाट्य को संगीत दंगल कहते है।
- कन्हैया, भेट, हेला और ढप्पाली ख्याल के दंगल आत्यधिक लोकप्रिय।
- धोलपुर का बाड़ी-बसेड़ी क्षेत्र भेंट दंगल हेतु प्रसिद्ध।
- करौली क्षेत्र कन्हैया दंगल हेतु प्रसिद्ध
- रसिया दंगल भरतपुर डीग क्षेत्र में।

चारबैत शैली

- एकमात्र केन्द्र टोंक।
- टोंक के नवाब फैजुल्ला खां के समय अब्दुल करीम खां निहंग व खलीफा करीम खां निहंग ने इसकी शुरूआत की।
- वाद्य डफ।
- मूलतः - पढानी मूल की।
- गायन-युद्ध के दौरान सिपाहियों का उत्साह बढाने हेतु।
- वीर रस प्रधान ।
- भक्ति, श्रृंगाार, रकीब खानी और गम्माज इसकी श्रेणियाँ।

कलाकार		उपनाम
रियाजुद्दीन खां	-	कव्वालों के बादशाह
साकर खां	-	कमायचा के जादूगर
हकिम खां	-	डाक टिकट वाले दादा
सिद्धीक खां	-	खड़ताल के जादूगर
राम किशन सोंलकी	-	नंगाडे का जादूगर
गणपत लाल डांगी	-	गीगला का बापू
कैलाश जागोटिया	-	'क्लाँथ आर्ट' के जन्मदाता
गुलाम गौस खां	-	'काका'
श्रेष्ठा सोनी	-	लिटिल वंडर

राजस्थान के लोक नृत्य

भवाई

- यह मूलतः मटका नृत्य है, इस नृत्य की यही पहचान है। इसे करने वाला अपने सिर पर मटका लिए रहता है।
- उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़ क्षेत्र में लोकप्रिय।
- भवाई जाति द्वारा।
- अदाकारियां-सिर पर 7-8 मटके रखकर नृत्य करना, तलवारों की धार पर नृत्य करना, जमीन से मुंह से रूमाल उठाना, गिलासों पर नाचना, थाली के किनारों पर नाचना।
- नृत्य अदायगी, शारीरिक क्रियाओं के अद्भूत चमत्कार तथा लयकारी मुख्य विशेषताएँ।
- बोरा बोरी, शंकरिया, सूरदास, बीकाजी, बाघाजी, ढोलामारू आदि भवाई नृत्य के प्रकार।
- कलाकार-कलजी, कुसुम, द्रोपदी, रूपसिंह शेखावत, सांगीलाल सांगड़िया (बाड़मेर), तारा, शर्मा, दयाराम, पुष्पा व्यास (जोधपुर) स्वरूप पंवार (बाड़मेर)।
- पुष्पा व्यास जोधपुर निवासी **भवाई नृत्य की प्रथम महिला कलाकार** जिसने इस नृत्य को राजस्थान के बाहर प्रचलित किया (बंबई, कलकत्ता)।

तेरहताली

- व्यवसायिक श्रेणी का नृत्य।
- रामदेवरा, डीडवाना, डूंगरपुर, उदयपुर में।
- पादरला गांव (पाली) नृत्य का जन्म स्थान माना जाता है।
- कामड़ जाति की महिलाओं द्वारा नृत्य, पुरूष, मंजीरा, ढोलक बजाते।
- शारीरिक कौशल का प्रदर्शन नृत्य में।
- एक मात्र नृत्य जो बैठकर किया जाता है।
- कलाकार-मांगीबाई (प्रसिद्ध), मोहनी नारायणी, लक्ष्मण दास कामड़।

कालबेलिया नृत्य

- व्यवसायिक श्रेणी का नृत्य।
- कालबेलिया नृत्य के चार प्रमुख प्रकार -
  - **इण्डोणी**-पुंगी व खैजरी वाद्ययंत्र, नर्तक युगल कामुकता का प्रदर्शन करने वाले कपड़े पहनते।
  - **शंकरिया**-प्रेम आधारित युगल नृत्य।
  - **पणिहारी**
  - **बागड़िया**-महिलाओं द्वारा भीख मांगते समय।
- कलाकार-गुलाबों (पुष्कर निवासी)।
- 17 नवम्बर 2010 को इसे यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया।

चकरी नृत्य-(फूंदी नृत्य)

- देविलाल सागर ने इस नृत्य को लोकप्रिय बनाया।
- व्यवसायिक श्रेणी का नृत्य।
- बूंदी जिले का प्रसिद्ध।
- हाड़ौती अंचल का लोकप्रिय।
- कंजर महिलाओं द्वारा।
- ढ़प, मंजीरा तथा नगाडो की लय।
- कलाकार-शांति, फुलावां फिलमाँ।

धाकड़ नृत्य

- कंजरो द्वारा हथियार लेकर किया जाने वाला व्यवसायिक श्रेणी का नृत्य।

शेखावटी क्षेत्र के नृत्य

- **गीदड़ नृत्य**- पुरूष स्वांग रचते है, प्रारम्भ होली का डाण्डा रोपने के बाद प्रारम्भ, पुरूषों द्वारा, नगाड़े की थाप पर। जो पुरूष स्त्री की वेशभूषा पहन कर भाग लेता उसे गणगौर कहते है। सुजानगढ़, रामगढ़, लक्ष्मणगढ़, चुरू, सीकर।
- **चंग नृत्य**-होली पर पुरूषों द्वारा शेखावटी में भी किया जाता।
- **ढप नृत्य**-बसंती पंचमी पर (माघ शुक्ला पंचमी)

कच्छी घोड़ी नृत्य

- व्यवसायिक नृत्य।
- शेखावटी, कुचामन, परबतसर, डीडवाना क्षेत्र में।
- वैवाहिक अवसरों पर किया जाता है।
- सरगड़े, कुम्हार, ढोली, भांसी यह नृत्य करते।
- लसकरिया, बींद, रसाला तथा रंगमारिया गीत गाए जाते।
- नृत्य पैटर्न बनाने की कला पर आधारित।

ढोल नृत्य - जालौर

- विवाह के अवसर पर पुरूषों द्वारा किया जाता है।
- प्रकाश में लाने की श्रेय जयनारायण व्यास को।
- नर्तक मुंह में तलवार, हाथों में डण्डे तथा रूमाल लेकर नृत्य करते।
- सरगड़ा व ढोली द्वारा।

बम नृत्य- (बम रसिया नृत्यं)

- भरतपुर। होली के अवसर पर नई फसल आने की खुशी में। प्रमुख वाद्ययंत्र-नगाड़ा (बम)।
- नर्तक रंग बिरंगे फूंदो व पंखों से बंधी लकड़ी हाथी में लेकर हवा में उछालते हुए नाचते।

मेवों के नृत्य

- **रणवाजा नृत्य**- स्त्री पुरूषों द्वारा।
- **रतवई नृत्य**-अलवर क्षेत्र की महिलाओं द्वारा। पुरूष अलगोचा व दमामी बजाते है, महिलाएं सिर पर इण्डोणी व सिरकी (खारी) रखकर हाथों में पहनी हुई हरी चूड़ियों को खनखनाती हुई।

नाहर नृत्य

- माण्डल गांव (भीलवाड़ा)
- होली पर (रंग त्रयोदशी-चैत्र कृष्ण त्रयोदशी से)-पुरूषों द्वारा
- उद्भव शाहजहाँ के शासन काल से माना जाता है।
- भील, मीणा, ढोली, सरगड़ा जातियों के लोग कपास रूई शरीर पर चिपका कर नाहर (शेर) का वेश धारण कर यह नृत्य किया जाता है।
- ढोल थाकना शैली में बजाया जाता है।

गरासियों के नृत्य

- **वालर**- महिला पुरूषों द्वारा, इस नृत्य का प्रारम्भ पुरूष द्वारा हाथ में तलवार/छाता लेकर, वाद्ययंत्र के बिना, धीमी गति से गणगौर के दिनों।
- **लूर नृत्य**-महिलाओं द्वारा शादी व मेले के अवसर पर।
- **कूद नृत्य**-महिला पुरूषों द्वारा बिना किसी वाद्य के। इसमें एक युवती अपने प्रेमी के साथ भाग जाने को उद्यत रहती है। वह अपने प्रेमी की सारी तैयारी व भाग जाने के करतब दिखाती है।
- **मांदल नृत्य (कोटा में)**-महिलाओं द्वारा गोलाकार नृत्य (वाद्य-बासूरी, थाली)।
- **गौर नृत्य**-गणगौर के अवसर पर स्त्री-पुरूषों द्वारा।
- **रायण नृत्य**-पुरूषों द्वारा महिलाओं का वेश बनाकर, शौर्य व वीरता का प्रदर्शन के लिए (वाद्य यंत्र-ढोल कुंडी)
- **जवारा नृत्य**-होली दहन से पूर्व, स्त्री पुरूषों द्वारा।
- **मोरिया नृत्य** - विवाह पर पुरूषों द्वारा।
- **गर्वा नृत्य**-सिरोही व उदयपुर जिले में केवल महिलाओं द्वारा (कथौड़ी)

- **मावलिया** - नवरात्रि में नौ दिनों तक पुरूषों द्वारा।
- **होली नृत्य**-होली पर, महिलाओं द्वारा पिरामिड बनाती नृत्य करते हुए। 10-12 महिलाओं द्वारा समूह बनाकर एक-दूसरे का हाथ पकड़कर।

भीलो के नृत्य

- **गैर नृत्य**-फाल्गुन मास में होली पर गैर नृत्य। स्त्री-पुरूषो द्वारा फसल की कटाई के अवसर पर। ढोल, मांदल, थाली।
- **गवरी/राई** नृत्य-धार्मिक नृत्य-मुखौटा प्रधान नृत्य उदयपुर संभाग में। केवल पुरूषों द्वारा। मादल व थाली बजाने के कारण इसे राई नृत्य कहते है। सावन-भादों में आयोजित किया जाता है।
- **युद्ध नृत्य**-पुरूषों द्वारा मेवाड़ का प्रसिद्ध नृत्य
- **द्विचकी नृत्य**-विवाह के अवसर पर पुरूषों महिलाओं द्वारा वृताकार में किया जाता है।
- **घूमरा**-बांसवाड़ा प्रतापगढ़, डूंगरपुर, महिलाओं द्वारा सभी उत्सवों पर।
- **नेजा नृत्य**-खेल नृत्य, होली के तीसरे दिन से। स्त्री-पुरूषों द्वारा। खम्भे पर नारियल बाधकर।
- **हाथीमना नृत्य**-विवाह के अवसर पर पुरूषों द्वारा घुटनों के बल बैठकर किया

सहरिया जनजाति के नृत्य

- **शिकारी नृत्य-(** व्यक्ति नृत्य/समूह नृत्य नहीं) बारां जिले का प्रसिद्ध लोक नृत्य।
- **झेला**-आषाढ माह में फसल पकने पर झेला गीत गाकर, **महिला**-पुरूष साथ मे।
- **इनरपरी**-पुरूष अपने मुंह पर भांति-भांति के मुखौटे लगाकर।
- **सांग**-स्त्री-पुरूषों द्वारा।
- **लहंगी नृत्य।**

अन्य नृत्य

- **मछली नृत्य**-प्रेम कहानी पर आधारित। घूमर शैली का नृत्य माना जाता है। बनजारों की स्त्रियाँ चांदनी रात में अपने खेमों में इस नृत्य का अभिनय करती है।
- **चरी नृत्य**-किशनगढ़ (अजमेर) में प्रसिद्ध। सिर पर चरी रखकर किया जाता है। गुर्जर जाति में लोकप्रिय है। फलकू बाई (किशनगढ़) प्रसिद्ध नृत्यांगना। बांकिया, ढोल, थाली प्रमुख वाद्ययंत्र। सबसे ऊपर की चरी में काकड़ा (कपास) के बीज में तेल डालकर आग । जन्म, विवाह, गणगौर (मांगलिक अवसरों पर)।
- **नाहर नृत्य**-ब्यावर (अजमरे) में बादशाह मेले में।
- राड नृत्य-सागवाड़ा (डूंगरपुर)
- **झूमरा** - वीर रस से संबंधित, केवल पुरूषों द्वारा। मेवाड़ में प्रसिद्ध। झूमरा वाद्ययंत्र के साथ।
- **घूमर**-लोक नृत्यों का सिरमोर, राजस्थान का राज्य नृत्य।
- गुजरात के गरबा से संबंधित लोकप्रिय नृत्य। होली, दीपावली, गणगौर व मांगलिक अवसरों पर। ढोल, नगाड़ा, शहनाई वाघ के साथ किया जाता है।
- घूमर के आठ मात्रा के कहरवे की विशेष चाल होती है। जिसे सवाई कहते है।
- **डांडिया नृत्य**-मूलतः गुजरात का नृत्य। मारवाड़ क्षेत्र में लोकप्रिय। होली के बाद प्रारम्भ। नृत्यों के साथ धमाल गीत व होली गीत गाते है। शहनाई व नगाड़ा बजाया जाता है।
- **झांझी नृत्य**-मारवाड़ क्षेत्र में महिलाओं द्वारा छोटे-छोटे छिद्रितमटको के साथ किया जाता है।
- **लांगुरिया नृत्य**-करौली में, कैलादेवी के भक्तों द्वारा।
- **पेजण नृत्य** -बागड़ क्षेत्र में लोकप्रिय। दीपावली के अवसर पर, स्त्री पात्रों की भूमिका पुरूषों द्वारा। नारी मनोभावों की अभिव्यक्ति का संदेश।
- **गरबा नृत्य**-गुजरात की प्रसिद्ध लोक नृत्य। बांसवाड़ा-डूंगरपुर क्षेत्रों में। स्त्रियों द्वारा तीन भागों में किया जाता है- शक्ति की आराधना व अर्चना, राधा कृष्ण का प्रेम चित्रण, लोक जीवन के सौन्दर्य की प्रस्तुति।
- **खारी नृत्य**-अलवर।
- **चरकूला**-मूलतः उत्तरप्रदेश का, भरतपुर में लोकप्रिय।
- **घुड़ला** - अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त (चैत्र कृष्णा अष्टमी से चैत्रशुक्ला तृतीया) जोधपुर का प्रसिद्ध। जयपुर के मणि गांगुली एवं देवीलाल सामर (उदयपुर) का प्रमुख योगदान। छिद्रित मटका जिसमें जलता हुआ दीपक रखकर स्त्री अपने सिर पर उठाकर नृत्य करती। प्रकाश में लाने का श्रेय कोमल कोठारी को।
- **गैर नृत्य** -नृत्य करने वालों को गैरिया कहते हैं, यह पुरूषों द्वारा किया जाता है। होली के दूसरे दिन से पन्द्रह दिन तक। मेवाड़ व मारवाड़ में लोकप्रिय (कनाना, बिलाड़ा, व समदड़ी में।
- **आंगी-बांगी की गैर**-प्रत्येक नर्तक चालीस मीटर के कपड़ें से बनी अंगी या बाग पहनते। कपड़े का रंग सफेद व लाल। लाखेटा व कनाना गांव (बाड़मेर) गैर की प्रसिद्ध है।
- **तलवारों की गैर**-मेनारिया (उदयपुर) में प्रसिद्ध। चैत्र कृष्णा द्वितीया से।
- **मोहिली नृत्य**-प्रतापगढ़ व डूंगरपुर क्षेत्र में।
- **शूकर नृत्य**-जालौर जिले की आहोर तहसील के बिजली गांव का प्रसिद्ध। मुख्यतः आदिवासियों की नृत्य।
- **पालीनोच नृत्य**-बांसवाड़ा क्षेत्र के आदिवासियों का लोक नृत्य। विवाह के अवसर पर
- **बादलिया नृत्य**-बादलिया एक घूमन्तू जाति जो गेरू को खोदकर व्यवसाय करती।
- **कबूतरी नृत्य**-चुरू क्षेत्र में प्रंसिद्ध। पेशेवर महिलाओं द्वारा किया जाता है।

प्रसिद्ध नृत्यांगाना

- **श्रीमती मांगी बाई**-जन्म वानिणा गांव (चित्तौड़), (1935 ई) विवाह -पाडरला गांव (पाली) के भैरूदास से।
- गुरू-जेठ-गोरमदास। 1990 ई. संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार। प्रसिद्ध तेरहताली नृत्यांगना।
- **अदिती शर्मा**-जन्म-2 अगस्त, 1991 (उदयपुर) जयपुर दूरदर्शन के अलावा राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित धारावाहिक सुरभि में प्रस्तुति।
- **श्रेष्ठा सोनी**-उदयपुर, लिटिल वंडर उपाधि भवाई नृत्यांगना।
- **आकांक्षा पालीवाल**-राजसमंद, प्रसिद्ध बाल नृत्यांगना। 13 जून 2007 को राष्ट्रपति भवन में राजस्थानी लोक नृत्य प्रस्तुत किया।

राजस्थानी वेशभूषा

पुरूष वेशभूषा

जोधपुरी कोट पेन्ट-

- जोधपुरी कोट-पेंट को राष्ट्रीय पोशाक का दर्जा।

पगड़ी-

- पगड़ी प्रतिष्ठा की प्रतीक।
- पगड़ी को पाग या पेचा भी कहते है।
- जयपुर रियासत की राजशाही पगड़ी।
- मोठड़े की पगड़ी सावन पर।
- मदील पगड़ी दशहरे पर तथा फुल पत्ती की छपाई वाली पगड़ी होली पर पहनी जाती है।

अंगरखी-

- ग्रामीण जनता श्वेत रंग की अंगरखी पहनती है। इसे ग्रामीण भाषा में बुगतरी कहते है।
- चुगा या चोगा, अंगरखी के ऊपर अमीर लोग पहनते है।
- ग्रीष्म ऋतु में तनजेब और जामदानी चुगो का उपयोग किया जाता है।
- आत्मसुख -अधिक ठण्ड मे लोग अंगरखी चोगे पर आतम सुख पहनते।
- सिटी पैलेस जयपुर में सबसे पुराना आत्मसुख सुरक्षित रखा गया है।

पटका

- अंगरखी या जामा के ऊपर कमरबन्द या पटका बांधने की प्रथा जिसें तलवार या कटार घुसी होती थी।

जामा

- 17 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक जामा पोशाक जिसे कचोटिया जामा कहते।
- बादशाह अकबर ने गोलदार जामें का प्रचलन करवाया।

पघवड़े या घुघी

- ग्रामीण लोग खेतों में काम करते समय ओढ़ते।

नान्दगा/नादड़ा

- आदिवासियों द्वारा प्रयुक्त होने वाला प्राचीनतम वस्त्र जिस की छपाई दाबु पद्धति से की जाती है।

ढेपाड़ा

- भीलों में पुरूष वर्ग द्वारा पहनी जाने वाली तंग धोती को।

लंगोटियाँ

- भीलों में पुरूषों द्वारा कमर पर बांधी जाने वाली लंगोटी।

स्त्री वेशभूषा

- **घाघरा**-ग्रामीण क्षेत्रों में पहना जाने वाला लंहगा।
- **साड़ियों के नाम**-ओढणी, चुंदड़ी, चोल, चोरसे, निचोल, धोरावाली, चीर पटोरी, पट, वसन, दुकूल, वसन, अंसूक।
- **कछावू**-लंगोटिया भील महिलाओं द्वारा घुटने तक पहना जाने वाला नीचा घाघरा।
- **लुंगड़ा**-आदिवासी स्त्रियों द्वारा पहने जाने वाले घाघरे का रूप इसमें जमीन पर लाल बुटे छपे होते है इसे अंगोछा साड़ी भी कहते है।
- **ओढनी**-शरीर के ऊपर ओढी जाती है।
- **कटकी**-विवाहित युवतियों ओर बालिकाओं की ओढनी है। जिसकी जमीन लाल होती है।
- **पोमचा**-जच्चा महिला की ओढनी, तारा भांत की ओढनी आदिवासियों में लोकप्रिय।
- **तिलका**-मुसलमान स्त्रियाँ चुड़ीदार पजामा पर तिलका नामक एक चोगा सा पहनती है और ऊपर से ओढनी ओढ लेती है।
- **पवरी**-दुल्हन की ओढनी कहते है।

आभूषण

- **सिर**-शीशफूल (सिर), मेमन्द (मेबन्द), बोरला (सिर), टीका, फीणी, मांग टीका, साकंली, रखड़ी सूर मांग, दामनी, तावित, टिकड़ो, सूवाभल्लकौ, टीड़ी भल्लको, मोर मीडली, मावटी, मोर मीडंली।
- **नाक**-नाग, लौंग, लटकन, बारी, चुनी, चोप, बुलाक, खीवण, झालरा।
- **कान**-झुमका, बाली, टोप्स, मुरकिया, लोंग।
- **गला**-सुरलिया हार, कण्ठी मटमाला, ठुस्सी, झालर, जंजीर, बड़ा, हंसली, पंचलड़ी तिमणीयां, चंदन हार, चम्पा, कली, मोग्ररन, मंडली, मोहन माला, होलरो, खंगाली, गुलीबन्द, जंतर, रानीहार, मांदलिया, कंठमाला, हालरो, तुलसी, बजट्टी, पोत, चन्द्रहार, हसहार, सरी, बलेवड़ा, निम्बोली।
- **बाजू**-बाजूबन्द, ठड्डा, तकया, बट्टा, चुड़ली, गजरा, हारपन, नवरतन, आरत, तड्डो, अनंत, भुजबन्द।
- **कलाई**-चुड़ीया, चुडा, कड़ा, कांकनी, हथफूल, पुचियाँ, बंगड़ी, गोखरू, छल्ला, अंगुठी, मूदड़ी व अरसी, गजरा, चॉट, नोखरी।
- **कमर**-तागड़ी, करथनी, कणकती, जंजीर, कंडोर, कन्दोरा।
- **पैर**-पायजेब, छड़, घुंघरू, पायल, कड़ा, जोधपुरी जोड़, नेवरी, आंवला, हिरना, मैन, लछने, नुपूर, झांझर, लच्छा, टोंका।
- **दांत**-रखन, चूंप।
- **अगुंलियाँ**- छल्ला, अंगुठी, मुंदड़ी, अरसी (अंगूठे की अंगूठी) बीठी, दामणा, हथपान, छड़ा, बिछिया(पैर) कुडक, नथड़ी या भंवर कड़ी।
- **पैर की अंगुली**-बीछिया, गोर पगपान फोलरी।

विवाह से संबंधित रीति रिवाज

- **रोड़ी पुजन**-रातिजगा के दूसरे दिन बारात रवाना होने से पूर्व की प्रातः काल स्त्रियों द्वारा रोड़ी पुजन। स्त्रियों वर को घर से बाहर कूडा-कचरे की रोड़ी पूजने के लिए ले जाती है जिस प्रकार रोड़ी धूप, वर्षा, आंधी सहन करती है उसी प्रकार वर-वधु सहन शील बने।
- **मुठ भराई**-बारातियों के बीच बैठा कर के सामने थाल में रूपये रखकर उसको मुठी में लेने को कहा जाता है इससे शुगन लिए जाते है।
- **पीली चिट्ठी**-सगाई के पश्चात् विवाह तिथि तय करवाकर कन्या पक्ष की ओर से एक चिट्ठी वरपक्ष को भेजना।
- **लग्न पत्रिका**-कागज में लिखकर एक नारियल के साथ वर के पिता के पास भिजवाया जाता।
- **कुंकम पत्रिका**-विवाह कार्यक्रमों की परिजनों को सूचना देने हेतु, छपवाना। प्रथम पत्रिका गणेश जी को भेजी जाती है।
- **सिंजारा**- इसमें संगाई के बाद वर को मुख्य रूप से गणेश चौथ पर तथा वधु को छोटी व बड़ी तीज एवं गणगौर पर उपहार भेजे जाते है।
- **बरी पड़ला (बरी बसना)** - वर पक्ष द्वारा वधु के लिए मेहंदी, वस्त्र, आभूषण खरीदकर लाना। जोधपुर बरिया की प्रसिद्ध है।
- **कांकन ड़ोरा**-विवाह के दो दिन पूर्व वर पक्ष द्वारा मोली के दो कौकन ड़ोरे बनाये जाते है। वर के दांये हाथ, वधू के बांये हाथ में बांधे जाते ।
- **बिन्दोली**-विवाह के एक दिन पूर्व वर यात्रा निकालना।

- **मोड़ बांधना**-विवाह के दिन सुहागिन स्त्रियाँ वर को उबटन से स्नान करा कर सिर पर सेहरा बांधती है, वर को मंदिर से लौटते समय माता अपने स्तन से दुध पिलाती है।
- **माया की गेह**-विवाह की वेदिका से उठने के बाद वधु माया की गेह में सिर झुकाने जाते है।
- **परणेत**-विवाह से संबंधित गीत।
- **बारात**-वर का काफिला
- **सामेला या मधुपर्क**-वधु का पिता अपने संबंधियों के साथ बारात का स्वागत करता इसे **ठुमाव** भी कहते।
- **तोरण**-गणेश जी का प्रतीक तथा शक्ति का प्रतीक है।
- **तेल चढ़ाना**-बारात के आजाने पर वधु के तेल चढाने की रस्म की जाती है, इसे आधा विवाह माना जाता है।
- **टुंटिया**-दुल्हे के घर बारात, प्रस्थान के बाद महिलाओं द्वारा हास-परिहास से संबंधित नाटक व गीत।
- **कुंवर कवेला** -सामेला के पश्चात्, दुल्हे को हल्का नास्ता देना।
- **झाला-मिला की आरती**-तोरण पर सास अथवा बुआ सास द्वारा की जाने वाली आरती।
- **कुंवारी जान का भात**
- **कन्यादान** -कन्या की जेबखर्ची।
- **कन्यावल**-विवाह के दिन वधु के माता-पिता तथा भाई बहन द्वारा किया जाने वाला उपवास।
- **मुकलावा या गौना**-विवाहित अवयस्क कन्या को वयस्क होने पर उसे सुसराल भेजना।
- **इकताई**-वर तथा वधु के कपड़े का माप दर्जी शुभ मुर्हत से लेता है।
- **चारी प्रथा**-खैराड़ क्षेत्र (भीलवाड़ा) में, इसमें लड़की के परिवार वाले लड़के के घरवालों से दहेज की तरह नकद राशि लेते है।
- **बासी मुंजरा (पेसकारा)** -विवाह के दूसरे दिन जहां बारात ठहराई जाती है वहां से वर पुनः वधु के यहां नाश्ता करने आता है, इस अवसर पर मांगलिक गीत गाये जाते है।
- **जेवनवार**-वधु पक्ष को बारातियों को चार जेवनवार (भोज) कराने का रिवाज।
- **बढ़ार**-विवाह का सामुहिक प्रीतिभोज (वधु पक्ष द्वारा)
- **ननिहारी**-पिता द्वारा बेटी को प्रथम बार विवाह के बाद विदा कराकर लाने की परम्परा
- **पहरावणी/रंगबरी**-वधु पक्ष की ओर से बारातियों को दिये जाने वाले उपहार
- **बारणा रोकना**-वर की बहन तथा बुआ कुछ दक्षिणा लेकर वर-वधु को वर के घर में प्रवेश आने देती है।
- **पडजान**-राजपूत समुदाय में बारात के घर पहुंचने पर वधु के भाई या संबंधी द्वारा बारात का आगे आकर स्वागत करना।
- **जुआ-जुई**-विवाह के दूसरे दिन, वर-वधु द्वारा खेल खेलना।
- बनौला-इसका अर्थ **आमंत्रित करना**, इस प्रथा के तहत परिवार के सभी लोग बनौला देने वाले के यहां खाना खाने जाते है।
- **खोल्यॉ**-वधु को ससूराल में किसी मोजिज व्यक्ति की गोद भेजना।
- **रियाण**-अफीम द्वारा मेहमानों को मान-मनवार करना।
- **काथला**-बेटी के प्रथम प्रसव होने पर उसके पीहर वालों द्वारा जंवाई व उसके संबंधियों को भेंट देना।
- **पोल-पात बारहठ**-राजपूतों में तोरण मारते समय वधु के निकट संबंधियों को दिया जाने वाला नेग।
- **पुरणाई**-मांगलिक अवसरों पर गोबर आदि से आंगन का लेपन।
- **बेरोटी**-विवाह के बाद वधु के स्वागत में किया जाने वाला भोज।
- **जूवाछवी**-बारात के प्रस्थान से पूर्व वर पक्ष की ओर से दिया जाने वाला भोज।
- **चौक च्यानवी**-शेखावटी क्षेत्र में बालकों द्वारा गणेश चतुर्थी पर किया जाने वाला स्वांग।
- **बत्तीसी नूतना**-वर तथा वधु की माता अपने पीहर वालों को निमंत्रण व पूर्ण सहयोग की कामना प्राप्त करने जाती है।
- **भात भरना**-वर तथा वधु के ननिहाल पक्ष वाले सहयोग की कामना के साथ भात भरते, मायरा भी।
- **नैत बाण**-विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर कुटुम्बियों व रिश्तेदारों आदि द्वारा दी जाने वाली भेट।
- **ओझण, ऊझणौ**-कन्या की विदाई के समय दिया जाने वाला सामान, दहेज।
- **कोरणियों**-वधु के मामा की ओर से दी जाने वाली पोशाक
- **नांगल**-नये घर में प्रवेश

मृत्यु रीति रिवाज

- **बैकुण्डी**-बांस या लकड़ी की तैयार अर्थी ।
- **बखेर या उछाल**-बैकुण्डी के ऊपर राह में पैसे बिखेरना।
- **दण्डोत**-मृतक व्यक्ति के निकट संबंधियों द्वारा साष्टांग दण्डवत करना।
- **आधेटा**-अर्थी की दिशा को बदलना।
- **कांधिया**-बैकुण्डी को ले जाने वाले चार व्यक्ति।
- **अत्येंष्ठि**-ज्येष्ठ पुत्र द्वारा तीन परिक्रमा करके
- **भदर**-शोक स्वरूप बाल, दाड़ी, मूछे कटवाना।
- **सातरवाड़ा/पालीवाड़ा**-दाह संस्कार सम्पन्न कर सम्मिलित जन संबंधित मृतक के परिवार को हिम्मत, हौसला व सहानुभूति प्रदान करते है, प्रक्रिया को सातरवाड़ा।
- **तीया**-तीसरे दिन शमशान में जल से भरा घड़ा तथा पके हुये चावल रखे जाते है।
- **फूल एकत्र करना**-तीसरे दिन मृतक के परिवारजन शमशान में जाकर मृतक की दाड़, दांत, हड्डियां चुन कर उन्हे लाल वस्त्र में बांधकर पवित्र गंगा में विसर्जन हेतु ले जाते है।
- **मौसर**-मृत्यु भोज
- **चौखला**-रियासत काल में कुछ गांवों का समुह, मृत्यभोज के अवसर पर इनकों जीमण।
- **जौसर**-जीवित मृत्यभोज।
- **रंग बदलना**-12 वें दिन उत्तराधिकारी के ससुराल वालें गुलाबी रंग के साफे लाते है। जो सफेद की जगह बंधवाते।
- **पगड़ी का दस्तूर**-मृतक के सबसे बड़े पुत्र को उत्तराधिकारी।
- **महीने का घड़ा**-मृत्यु के एक माह पश्चात् यज्ञ व दान।
- **श्राद्ध**-भादपद पूर्णिमा से आश्विन अमावस्या तक।
- **ओख**-जब किसी परिवार में त्यौहार के दिन मृत्यु होने पर पीढी उस त्यौहार को नहीं मनाते है।

सामाजिक प्रथाएँ

सतीप्रथा

- सर्वप्रथम बूंदी में 1822 ई. गैर कानूनी घोषित। सर्वप्रथम इस प्रथा को रोकने हेतु मुहम्मद तुगलक ने आदेश जारी किये थे।
- 1829 ई. को गवर्नर जनरल विलियम बैटिक द्वारा सती प्रथा को गैर कानूनी घोषित किया गया।
- 1830 ई. अलवर में गैर कानूनी, 1844 ई. में मारवाड़ रियासत में, 1848 ई. में, जयपुर में, 1861 ई. में मेवाड़ में प्रतिबन्धित।
- अणख-सती होने वाली स्त्री अपने परिवार के सदस्यों को कुछ वचन दे जाती है।
- राजा राममोहन राय के प्रयासों से सतीप्रथा को 1829 ई. गैर कानूनी घोषित किया गया।
- राजस्थान सती निवारण अध्योदश -1987 से लागू।
- **अनुमरण**-पति की किसी वस्तु के साथ सती होना ऐसी सतियों को **महासती** भी कहते है।
- **माँ सती**-पुत्र के साथ सती होना।
- **सहमरण, सहगमन, अन्वारोहण**-सती प्रथा के अन्य नाम।

समाधि प्रथा

- किसी पुरूष या साधु महात्मा द्वारा जल समाधि या भू समाधि। सर्वप्रथम जयपुर के पॉलिटिकल एजेन्ट लुडलो के प्रयासों से 1844 ई. जयपुर में गैर कानूनी। समाधि निरोधक अधिनियम 1861 ई.।

त्याग प्रथा

- राजपूत जाति में प्रचलन, विवाह के समय चारण, भाट ढोली आदि लड़की वालों से मूंह मांगी दान-दक्षिण प्राप्त करने हेतु हठ करते, जिसे त्याग कहा जाता है।
- सर्वप्रथम 1841 ई. जोधपुर में गैर कानूनी (महाराजा मानसिंह द्वारा) घोषित।
- वाल्टर कृत राजपूत हितकारिणी सभा ने इसे समाप्त करने का प्रयास किया।
- 1844 बीकानेर के रतनसिंह द्वारा प्रतिबन्धित किया गया।

डाकन प्रथा

- भील और मीणा जनजातियों में प्रचलन।
- सर्वप्रथम अप्रैल 1853 ई. महाराणा स्वरूपसिंह के समय मेवाड़ भील कोर के कमान्डेन्ट जे.सी.बुक ने खेरवाड़ा (उदयपुर) में गैर कानूनी जाट।
- गुर्जर, यादव, भील, मीणाओं में प्रचलन।
- राजस्थान अध्ययन के अनुसार कक्षा 10 की पुस्तिका मे 1853 में मेवाड़ रेजीमेन्ट कर्नल ईडन के परामर्श पर मेवाड़ महाराणा जवानसिंह में डाकन प्रथा को गैर कानूनी घोषित किया।
- नाता प्रथा-पत्नी अपने पति को छोड़कर किसी अन्य पुरूष के साथ रहने लगती।

डावरिया प्रथा

- राजा महाराजाओं व जागीरदारों द्वारा अपनी लड़की के विवाह में दहेज के साथ कंवारी कन्याएं दी जाती थी।

दहेज प्रथा

- 1961 ई. भारत सरकार ने दहेज निरोधक अधिनियम पारित।

दास प्रथा

- सर्वप्रथम 1832 ई. कोटा-बूंदी द्वारा रोक 1832 ई. विलियम बेंटिक ने इसे समाप्त करने हेतु रोक लगाई।
- **पड़दायत**-दासी को राजा उपपत्नी स्वीकार करता है।
- **पासवान या खवासन**-ऐसी दासी जिसे राजा हाथ पैरों में सोने के गहने पहनने का अधिकार दे दें।

बेगार प्रथा

- राजाओं सामन्तों व जागीरदारों द्वारा अपनी जनता को बिना पारिश्रमिक या कम मजदूरी देकर अधिक मेहनत करवाना।
- ब्राह्मण तथा राजपूत जातियां इससे मुक्त।
- 1961 बेगार विरोधी अधिनियम पारित किया गया।

बंधुआ मजदूर प्रथा या सागड़ी प्रथा

- हाली प्रथा।
- पूंजीपति, महाजन या उच्च कुलीन लोगों से ब्याज पर पैसे लेने वाला व्यक्ति जब तक उन पैसों को चुकाता नहीं तब तक उनके घर मजदूरी करता है, 1961 सागडी निवारण अधिनियम ।

कन्या वध

- सर्वप्रथम कोटा राज्य में 1833 ई. में गैर कानूनी घोषित, 1834 ई. को बूंदी रियासत में रोक लगाई।
- बीकानेर के रतनसिंह एवं जयपुर के सवाई जयसिंह ने इसे रोकने हेतु प्रयास (1836)।

बाल विवाह

- अजमेर के हरविलास शारदा ने 1929 ई. बाल विवाह निरोधक अधिनियम पारित किया 1 अप्रैल 1930 शारदा एक्ट सम्पूर्ण भारत में लागू (लड़की के लिए 14 वर्ष तथा लड़के के लिए 18 वर्ष)।
- जोधपुर राज्य में वाल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा के प्रयासों से यहां के पी.एम. सरप्रतापसिंह ने 1885 बाल विवाह निरोधक कानून बनाया था।

विधवा विवाह

- ईश्वर चन्द विद्यासागर के प्रयासों से 1856 ई. विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित।
- सवाई जयसिंह ने विधवाओं के पुन: विवाह पर बल दिया था।
- **श्री चांद करण शारदा** ने 'विधवा विवाह' पुस्तक लिखी।

कूकड़ी की रस्म

- आदिवासियों में विशेषत: सांसी जनजाति में यह प्रथा प्रचलित है इसमें शादी होने पर युवती को अपने चारित्रिक पवित्रता की परीक्षा देनी होती है।

देश हितैषणी सभा

- स्थापना 2 जुलाई 1877ई. उदयपुर में महाराणा सज्जनसिंह की अध्यक्षता में।
- वैवाहिक समस्याओं के निवारण हेतु।

वाल्टर कृत राजपूत हितकारिणी सभा

- स्थापना 1888-89 संस्थापक-मेवाड़ के कार्यवाहक AGG वाल्टर।
- उद्देश्य-राजपूतों में समाज सुधार, बहुविवाह प्रथा को समाप्त करना, टीका प्रथा को समाप्त करना

लड़की की विवाह की आयु 14 वर्ष तथा लड़के के विवाह की आयु 18 वर्ष निर्धारित की गई।

निर्माण IAS